bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2081 युगाब्द 5126 कुल पृष्ठ–32 नवम्बर द्वितीय 2024, वर्ष –36 : अंक –08

कमल ज्योति

₹20

भारतीय जनता पार्टी
उत्तर प्रदेश

संविधान दिवस की शुभेच्छा!

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
Vartman Kamaljyoti
@bjpkamaljyoti

सम्पादकीय

सनातन संस्कृति का समागम "महाकुंभ"

12 सालों बाद एक बार फिर प्रयागराज में संगम तट पर महाकुंभ मेला लगने जा रहा है। भारतीय सनातन परम्परा में महाकुम्भ में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक नीति–रीती व्यवस्थाओं में मंथन परिवर्तन के लिए जुटान होता है।

संगम का पवित्र तट सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के साथ साथ आध्यात्मिकता और परंपरा का अद्भुत संगम बन जाता है। इससे पहले महाकुंभ मेला 2013 में ही प्रयागराज में लगा था। महाकुंभ मेले के लिए बड़े स्तर पर महीनों पहले से ही तैयारियां शुरु हो जाती हैं। मेला जनवरी पौष पूर्णिमा से शुरू हो रहा है और 26 फरवरी यानी महाशिवरात्रि तक चलेगा। इस बार महाकुंभ मेले में भाग लेने के लिए दस करोड़ से ज्यादा भक्त आने वाले है। संगम के तट पर गंगा, यमुना और सरस्वती नदी का अदृश्य रूप से संगम होता है और इस संगम में नहाने से पुण्य प्राप्त होता है। प्रयागराज में महाकुंभ मेला लगता है जबकि अर्धकुंभ मेला हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित होता है। मान्यता है कि महाकुंभ मेले में स्नान से व्यक्ति के सभी सांसारिक पाप और क्लेश कट जाते हैं और व्यक्ति जन्म मरण के चक्र से मुक्ति पा लेता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जब समुद्र मंथन हो रहा था तब अमृत कलश से कुछ बूंदें धरती पर गिरीं। अमृत से भरे कुंभ यानी कलश की ये बूंदें प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार जैसे पवित्र स्थानों पर गिरीं और तबसे इन चार स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता आया है। हर बारह साल में जब बृहस्पति देव यानी गुरु ग्रह वृषभ राशि में स्थापित हो और सूर्य ग्रह मकर राशि में हों तब कुंभ मेला आरंभ होता है। अगले साल 13 जनवरी को सूर्य मकर राशि में गोचर करने वाले हैं। जबकि बृहस्पति पहले से ही वृषभ राशि में मौजूद हैं। ऐसे में महाकुंभ मेले के योग बन रहे हैं मगर संक्रान्ति से महाकुंभ मेला आरंभ हो रहा है। ग्रहों की विशेष युति से ही कुंभ और अर्धकुंभ मेले के योग बनते हैं। महाकुंभ की तरह जब सूर्य ग्रह और बृहस्पति ग्रह दोनों ही ग्रह सिंह राशि में गोचर करते हैं तो अर्धकुंभ मेला महाराष्ट्र के नासिक में आयोजित होता है। इसके अलावा जब सूर्य मेष राशि और बृहस्पति कुंभ राशि में गोचर करते हैं तो कुंभ मेले का आयोजन हरिद्वार में किया जाता है। उज्जैन में कुंभ मेला तब आयोजित होता है जब बृहस्पति देव सिंह राशि में और सूर्यदेव मेष राशि में विराजमान होते हैं।

पूर्ण कुंभ हर बार प्रयागराज के तट पर ही आयोजित होता है और ये सनातन धर्म का सबसे बड़ा समागम कहलाता है क्योंकि यहां शाही अखाड़े के साधु स्नान करने आते हैं। शाही अखाड़े घोड़े और हाथियों पर अपने अपने लाव लश्कर के साथ साधुओं को लेकर संगम तट पर स्नान के लिए आते हैं जिसे शाही स्नान कहा जाता है।

आज वैश्विक स्तर पर सनातन परम्परा, हिन्दू, संस्कृति पर अनेक चुनौतियों के साथ संस्कार का संकट मंडरा रहा है। उससे निपटने की संत समाज द्वारा प्रभावी योजना के संकेत आ रहे हैं। जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" को शांति के तरफ ले जायेगा।

कांग्रेस एक परजीवी पार्टी : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित "महाराष्ट्र एवं झारखंड के विधान सभा चुनाव एवं अन्य राज्यों में हुए उपचुनावों में भाजपा को अभूतपूर्व आशीर्वाद देने के लिए जनता का हृदय से आभार" कार्यक्रम में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरिमामय उपस्थिति में पार्टी कार्यकर्ताओं के हुजूम को संबोधित किया। कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह सहित पार्टी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी, नेतागण तथा भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्री नड्डा ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करते हुए कहा कहा कि आज महाराष्ट्र की जनता एवं विभिन्न राज्यों की जनता ने चुनावों में जो संदेश दिया है, उसने आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के देशवासियों की सेवा के संकल्प और कार्य पर, फिर एक बार मुहर लगा दी है। मैं महाराष्ट्र, झारखंड और विभिन्न राज्यों के उपचुनाव में भाजपा की ओर से जनता के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि बीते दिन ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी 5 दिन की विदेश यात्रा में नाइजीरिया ब्राजील और गुयाना होकर देश लौटे हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दुनिया में अपनी छाप छोड़ी है। नाइजीरिया और गुयाना ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपने–अपने देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया है। इससे पहले दुनिया के कई देश हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी को सम्मानित कर चुके हैं। भारत और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की छवि को आज दुनिया मान रही है। पहले हरियाणा और अब महाराष्ट्र विधानसभा और अन्य राज्यों के उपचुनाव में मिली जीत ये बताती है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकासवाद और गांव, गरीब, वंचित, दलित, महिला, युवा, किसान को मुख्यधारा में शामिल करने और विकसित भारत की संकल्पना पर जनता ने फिर से मुहर लगा दी है। चुनाव परिणाम ने स्पष्ट कर दिया है कि समाज को बांटने और गुमराह करने की कोशिश करने वालों को मुंह की खानी पड़ी और देश ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकासवाद को सराहा है।

श्री नड्डा ने कहा कि कुछ समय से इंडी अलायंस को यह भ्रम हो गया था कि वे लोगों को संविधान, जाति, धर्म और तुष्टिकरण के नाम पर बांटकर, सत्ता पर काबिज हो सकते हैं लेकिन हरियाणा के बाद महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के परिणाम ने इंडी अलायंस को करारा जवाब दिया है। महाराष्ट्र के जनादेश ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि 2019 में भी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को जनादेश मिला था लेकिन उद्धव ठाकरे की सत्ता के प्रति मोह और अवसरवादिता के कारण धोखा देकर, उस जनादेश का अपमान किया। महाराष्ट्र के चुनावी नतीजों ने उद्धव ठाकरे को धता दिखाकर बता दिया कि महाराष्ट्र की जनता भाजपा, शिवसेना (शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) के साथ है।

> **कुछ समय से इंडी अलायंस को यह भ्रम हो गया था कि वे लोगों को संविधान, जाति, धर्म और तुष्टिकरण के नाम पर बांटकर, सत्ता पर काबिज हो सकते हैं लेकिन हरियाणा के बाद महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के परिणाम ने इंडी अलायंस को करारा जवाब दिया है।**

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी जी ने लोकसभा चुनावों के बाद कांग्रेस पार्टी को लेकर कहा था कि कांग्रेस एक परजीवी पार्टी है, जो बेल की लता की तरह किसी दूसरे पर चिपक जाती है। यह खुद तो सूख जाती है, लेकिन जिससे लिपटती है, उसे भी सुखा देती है। इस बात को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महाविकास अघाड़ी के नतीजों ने पूरी तरह प्रमाणित कर दिया है। कांग्रेस ने न केवल खुद को कमजोर किया, बल्कि अपने गठबंधन के सहयोगियों को भी नुकसान पहुंचाया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राजनीति में एक नया शब्द सामने आया है

प्रो–इनकंबेंसी। यह शब्द, जो पिछले 70 वर्षों में कभी नहीं सुना गया, आज भाजपा की उपलब्धियों को परिभाषित करता है। गुजरात में तीन दशकों से कमल खिल रहा है, मध्यप्रदेश में दो दशकों से भाजपा का वर्चस्व है, और असम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, तथा गोवा में पिछले दो कार्यकाल से एनडीए की सरकारें सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। इस बार महाराष्ट्र की जनता ने भी भाजपा पर भरोसा जताते हुए दोबारा कमल खिलाया है। उपचुनावों में भाजपा के पास जहां पहले सिर्फ 11 सीटें थीं, वहां अब 20 सीटों पर जीत दर्ज की गई है। एनडीए ने 8 सीटें जीती हैं, जिससे कुल आंकड़ा 28 तक पहुंच गया है। यह देश के मूड और जनता के विश्वास को दर्शाता है।

श्री नड्डा ने कहा कि उपचुनावों में उत्तर प्रदेश में भाजपा ने 9 में से 7 सीटें जीती और पहली बार कुंदरकी विधानसभा सीट पर विजय हासिल की है। राजस्थान में, जहां पहले एनडीए के पास 2 सीटें थी, जिसमें से भाजपा के पास 1 थी, अब राज्य के अंदर भाजपा ने 7 में से 5 सीटों पर जीत दर्ज की है। बिहार में एनडीए ने श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में सभी 4 सीटें जीती हैं। इनमें से एक सीट एनडीए सहयोगी हिंदुस्तान आवाम मोर्चा के पास गई, जबकि 32 सालों से आरजेडी के पास रही सीट को जेडीयू ने जीत लिया। शाहबाद क्षेत्र की सीटों पर भी, जहां पहले आरजेडी का कब्जा था, जेडीयू ने जीत दर्ज कर एनडीए को मजबूत किया है। असम के उपचुनावों में एनडीए ने पांचों सीटों पर विजय प्राप्त की। गुजरात में जहां भाजपा ने जिस विधानसभा सीट पर पहले कभी जीत दर्ज नहीं की थी, इस बार वहां भी भाजपा ने परचम लहराया है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड में भी भाजपा ने अपनी 1–1 सीटें पुनः जीतकर अपने पास बरकरार रखी हैं।

कांग्रेस एक परजीवी पार्टी है, जो बेल की लता की तरह किसी दूसरे पर चिपक जाती है। यह खुद तो सूख जाती है, लेकिन जिससे लिपटती है, उसे भी सुखा देती है। महराष्ट्र इसका एक और उदाहरण है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने महाराष्ट्र, झारखंड और 13 राज्यों में हुए उपचुनाव के परिणामों के लिए जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री नड्डा ने कहा कि झारखंड में भाजपा को विपक्ष में रहने का जनादेश मिला है। हम झारखंड में विपक्ष में रहते हुए अपनी रचनात्मक भूमिका को निभाएंगे और देश को मजबूत करते हुए बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध चल रहे अभियान को आगे बढ़ाएंगे। भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं ने बहुत परिश्रम किया है और आज उनकी मेहनत रंग लाई है। मैं सभी कार्यकर्ताओं को दिल से धन्यवाद देता हूँ। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा देश को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करती रहेगी।

विकासवाद सुशासन की जीत : मोदी

"महाराष्ट्र एवं झारखंड के विधान सभा चुनाव एवं अन्य राज्यों में हुए उपचुनावों में भाजपा को अभूतपूर्व आशीर्वाद देने के लिए जनता का हृदय से आभार" कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं के हुजूम को संबोधित किया और भारतीय जनता पार्टी की जीत को सत्य एवं न्याय की जीत बताते हुए जनता–जनार्दन को नमन किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह सहित पार्टी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी, नेतागण तथा भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने "जय भवानी, जय शिवाजी" के नारे के साथ कहा कि महाराष्ट्र में विकासवाद व सुशासन की जीत हुई, सच्चे सामाजिक न्याय की जीत हुई है। महाराष्ट्र ने विकसित भारत के संकल्प को और मजबूत किया है।

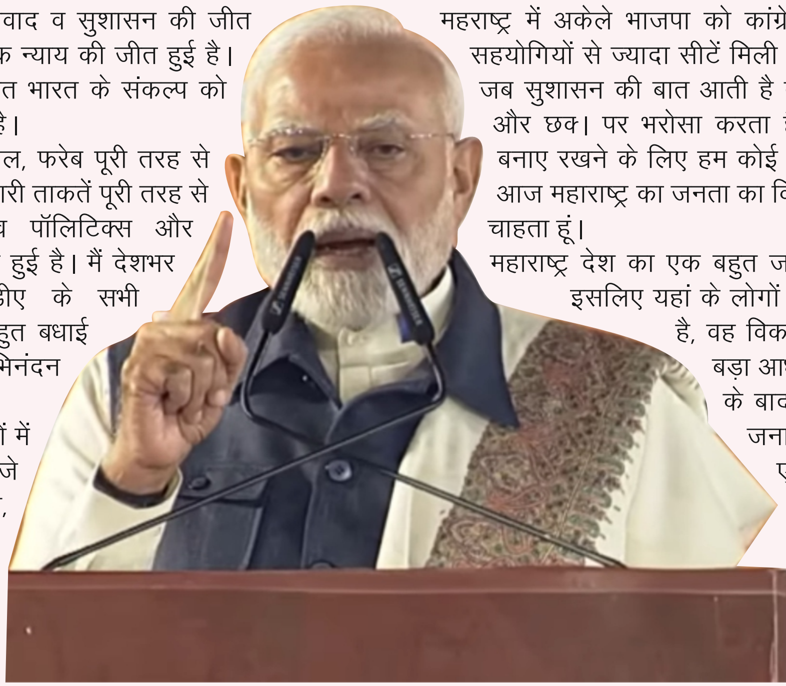

महाराष्ट्र में झूठ, छल, फरेब पूरी तरह से हारा है। विभाजनकारी ताकतें पूरी तरह से हारी हैं। निगेटिव पॉलिटिक्स और परिवारवाद की हार हुई है। मैं देशभर के भाजपा, एनडीए के सभी कार्यकर्ताओं को बहुत बधाई देता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं।

देश के अनेक राज्यों में उपचुनाव के नतीजे आए। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान ने भाजपा को जमकर समर्थन दिया है। असम के लोगों ने भाजपा पर एक बार और समर्थन जताया है। मध्य प्रदेश में भी हमें सफलता मिली है। बिहार में एनडीए का समर्थन बढ़ा है। ये दिखाता है कि देश सिर्फ विकास चाहता है। मैं माताओं–बहनों, किसानों का, युवाओं का, देश की जनता का नमन करता हूं। मैं झारखंड की जनता को भी नमन करता हूं। वहां के विकास के लिए और काम करेंगे।

छत्रपति शिवाजी महाराज, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर, सावित्री फुले, बाला साहेब ठाकरे की पावन धरती महाराष्ट्र ने जीत के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। बीते 50 साल में किसी भी पार्टी, किसी भी प्री–पोल अलायंस के लिए ये सबसे बड़ी जीत है।

ये लगातार तीसरी बार है जब भाजपा के नेतृत्व में किसी गठबंधन को लगातार महाराष्ट्र ने विजयी बनाया है। ये भी लगातार है जब भाजपा महाराष्ट्र में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। ये निश्चित रूप से ऐतिहासिक है। ये भाजपा के गवर्नेंस मॉडल पर जनता के विश्वास की मुहर है।

महाराष्ट्र देश का छठा राज्य है जिसने भाजपा को लगातार तीन बार जनादेश दिया है। गोवा, गुजरात, छत्तीसगढ़, हरियाणा, मध्य प्रदेश में हम लगातार तीन बार जीत चुके हैं। बिहार में भी छक। को तीन बार लगातार जनादेश मिला है।

महराष्ट्र में अकेले भाजपा को कांग्रेस और उसके सभी सहयोगियों से ज्यादा सीटें मिली है। ये दिखाता है कि जब सुशासन की बात आती है तो देश सिर्फ भाजपा और छक। पर भरोसा करता है। इस विश्वास को बनाए रखने के लिए हम कोई कसर नहीं रखेंगे। मैं आज महाराष्ट्र का जनता का विशेष अभिनंदन करना चाहता हूं।

महाराष्ट्र देश का एक बहुत जरूरी ग्रोथ इंजन है। इसलिए यहां के लोगों ने जो जनादेश दिया है, वह विकसित भारत का बहुत बड़ा आधार बनेगा। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र चुनाव का जनादेश है एकजुटता – एक हैं तो सेफ हैं। महाराष्ट्र ने डंके की चोट पर कहा है – एक हैं तो सेफ हैं। विपक्ष ने सोचा था संविधान और आरक्षण के नाम पर झूठ बोलकर एससी एसटी, ओबीसी को समूहों में बांट देंगे। कांग्रेस और उसके साथियों की इस साजिश को महाराष्ट्र ने सीधे से खारिज कर दिया है।

महराष्ट्र ने जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर लड़ाने वालों को सजा दी है। ओबीसी, दलित, आदिवासी सहित सभी वर्ग ने भाजपा–एनडीए को वोट दिया। जनता ने कांग्रेस और उसके साथियों की सोच के इकोसिस्टम पर करारा जवाब दिया है जो समाज को बांटने का एजेंडा चला रहे हैं। हम विकास और विरासत, दोनों को साथ लेकर चलते हैं।

इसलिए हमें वोट मिला है। छत्रपति शिवाजी महाराज हमारी प्रेरणा हैं। हमने हमेशा आबेडकर, महात्मा फुले, सावित्री फुले को माना है।

कांग्रेस को सालों तक मराठी भाषा की सेवा का मौका मिला लेकिन इन लोगों ने इसके लिए कुछ नहीं किया। हमारी सरकार ने मराठी को क्लासिकल लेंग्वेज का दर्जा दिया। मातृभाषा का सम्मान, संस्कृतियों का सम्मान, इतिहास का सम्मान हमारे संस्कार और इतिहास में हैं। मैं तो हमेशा कहता हूं कि मातृभाषा का सम्मान मतलब अपनी मां का सम्मान।

इंडी वाले देश के बदले मिजाज को नहीं समझ पा रहे हैं। ये लोग सच्चाई को स्वीकार करना नहीं चाहते। ये लोग आज भी भारत के सामान्य मतदाता के विवेक को कम आंकते हैं। देश का मतदाता अस्थिरता नहीं चाहता। देश के मतदाता 'नेशन फर्स्ट' के साथ है। जो कुर्सी फर्स्ट के साथ हैं, उन्हें

ताकत 370 को जम्मू–कश्मीर में वापस नहीं ला सकती है। महाराष्ट्र चुनाव ने इंडी वालों का, अघाड़ी वालों का दोमुंहां चेहरा भी देश के सामने खोलकर रख दिया है। हम सब जानते हैं कि बाला साहेब ठाकरे का देश–समाज के लिए कितना बड़ा योगदान रहा है। कांग्रेस ने अपने लालच में उनकी पार्टी के एक धड़े को साथ ले लिया लेकिन बाला साहेबकी तस्वीर निकाल दी। कांग्रेस का कोई भी नेता बाला साहेब की प्रशंसा नहीं करता है।

कांग्रेस का मकसद सिर्फ वीर सावरकर को बदनाम करना है। कांग्रेस ने पूरे देश में वीर सावरकर का अपमान किया, उन्हें गालियां दी।

भारत की राजनीति में अब कांग्रेस पार्टी परजीवी बनकर रह गई है। कांग्रेस के लिए अपने दम पर सरकार बनाना लगातार मुश्किल हो रहा है। आंध्र, अरुणाचल, सिक्किम, हरियाणा और आज महाराष्ट्र में उनका सूपड़ा साफ हो गया

देश का नेचर पसंद नहीं आ रहा।

जो राजनीतिक दल एक राज्य में बड़े–बड़े वादे करता है, जनता दूसरे राज्य में उसकी चमतवितउंदबम देखती है। इसलिए, कांग्रेस के पाखंड को जनता ने खारिज कर दिया है। कांग्रेस ने जनता को गुमराह करने के लिए दूसरे राज्यों के सीएम मैदान में उतारे, तब भी इनकी चाल कामयाब हुई। इनके झूठे वादे नहीं चले।

महाराष्ट्र के जनादेश का एक और संदेश है। वह यह कि पूरे देश में एक ही संविधान चलेगा वह है बाबा साहेब का संविधान, भारत का संविधान। देश में जो दो संविधान की बात करेगा, उसको देश पूरी तरह से नकार देगा।

कांग्रेस और उसके साथियों ने जम्मू–कश्मीर में फिर से धारा 370 की दीवार बनाने का काम किया। यह संविधान का अपमान है। कांग्रेस और उसके सहयोगियों को स्पष्ट कहना चाहता हूँ कि कान खोलकर सुन लो, अब दुनिया की कोई भी

है।

कांग्रेस की विभाजनकारी राजनीति लगातार पिस हो रही है लेकिन उसका अहंकार सातवें आसमान पर है। कांग्रेस परजीवी पार्टी बन चुकी है। वह अपने साथियों का नाव भी डुबो देती है।

महाराष्ट्र में कांग्रेस के गठबंधन ने यहां की हर पांच में से 4 सीटें हारी हैं। अघाड़ी के हर घटक का स्ट्राइक रेट 20 फीसदी से कम है। ये दिखाता है कि कांग्रेस खुद डूबती है और दूसरों को भी डुबोती है। उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कांग्रेस के सहयोगियों ने अपनी जान छुड़ा ली, वरना वहां भी कांग्रेस के सहयोगियों को लेने के देने पड़ जाते।

हमारे संविधान निर्माताओं ने 1947 में विभाजन की विभिषिका के बीच में भी हिंदू संस्कार और परंपरा को निभाते हुए पंथ निरपेक्षता की राह को चुना था। कांग्रेस के इस

परिवार ने झूठे सेक्युलरिज्म के नाम पर उसे बदनाम किया। दशकों तक कांग्रेस ने देश में यही खेल खेला है। संविधान के साथ कांग्रेस के एक परिवार ने विश्वासघात किया है।

कांग्रेस ने तुष्टिकरण के लिए कानून बनाए। इसके लिए उसने सुप्रीम कोर्ट के ऑर्डर की भी परवाह नहीं की। वक्फ बोर्ड इसका उदाहरण है। हालात ये था कि 2014 में सरकार से जाते–जाते कांग्रेस ने दिल्ली की कई संपत्ति वक्फ बोर्ड को सौंप दी थी। बाबा साहेब के संविधान में वक्फ कानून को कई स्थान नहीं है। फिर भी कांग्रेस ने वक्फ बोर्ड की व्यवस्था पैदा कर दी। कांग्रेस के शाही परिवार की सोच इतनी विकृत हो गई है कि उन्होंने सामाजिक न्याय की व्यवस्था को चूर–चूर कर दिया। आज यही कांग्रेस और उसका परिवार खुद ही स्वार्थ में सत्ता भूख को शांत करने के लिए जातिवाद का जहर फैला रहा है। इन लोगों ने सामाजिक न्याय का गला घोंट दिया है। एक परिवार की सत्ता भूख इतनी चरम पर है कि उन्होंने अपनी पार्टी को ही खा लिया है। देश के अलग–अलग भागों में कांग्रेस के पुराने लोग हैं जो अपने जमाने की कांग्रेस को ढूंढ रहे हैं लेकिन आज की कांग्रेस की आदत, व्यवहार से साफ पता चल रहा है कि ये वो कांग्रेस नहीं है। कांग्रेस में आतंरिक रूप से असंतोष की ज्वाला भड़क चुकी है। एक परिवार को कांग्रेस चलाने का हक है, केवल वही काबिल हैं, बाकी सब नहीं – इनकी इसी सोच ने कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता के लिए वहां काम करना मुश्किल कर दिया है।

कांग्रेस का परिवार सत्ता के बिना जी नहीं सकता। चुनाव जीतने के लिए ये कुछ भी कर सकते हैं। दक्षिण में जाकर उत्तर को, उत्तर में जाकर दक्षिण को और विदेश में जाकर देश को गाली देना – यही इनका काम है।

हर दिन नया झूठ बोलते रहना, कांग्रेस और उसके परिवार की सच्चाई बन गई है। आज कांग्रेस का अर्बन नक्सलवाद भारत के सामने चुनौती बनकर खड़ा हो गया है। इसका रिमोट देश के बाहर है। इससे बचना जरूरी है। कांग्रेस की हकीकत जानना जरूरी है।

हरियाणा से मिले आशीर्वाद पर हमने बात की थी। आज महाराष्ट्र के सभी शहरों ने आज स्पष्ट राय रखी है। शहरी क्षेत्रों के गरीब, मिडिल क्लास ने भाजपा का समर्थन किया है। आधुनिक भारत का संदेश दिया है। हमारे महानगरों ने विकास को चुना है। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर को चुना है। विकास की बाधाओं को नकार दिया है।

आज का शहरी भारत इज ऑफ लिविंग चाहता है, इसके लिए उनका भरोसा भाजपा–एनडीए पर है। आज भाजपा देश के युवाओं को नए–नए सेक्टर में अवसर देने का काम कर रही है। स्टार्टअप के लिए बीजेपी नीतियां बना रही है। निर्णय ले रही है।

हमारा मानना है कि भारत के शहर विकास का इंजन हैं। शहर के विकास से गांव को ताकत मिलती है। हमारे शहर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शहरों के लिस्ट में आए हैं। बीजेपी–एनडीए की सरकारें इसी लक्ष्य के लिए काम कर रही है।

मैं एक लाख ऐसे युवाओं को भाजपा में लाना चाहता हूं जिनके परिवार का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। ऐसे उम्मीदवारों को आज जनता ने समर्थन दिया है। लोकतंत्र में. जय – पराजय चलती रहेगी।चुनाव आएंगे – जाएंगे लेकिन भाजपा का ध्येय देश बनाने का है, केवल सरकार का बनाने का नहीं। हम विकसित भारत बनाने के लिए निकले हैं। भाजपा का हर कार्यकर्ता देश के विकास में जुटा है। आप विश्वास इसको और मजबूत करता है। हमारे प्रतिनिधि विकास के संकल्प के प्रतिबद्ध हैं। हमें सेवक बनकर देश के हर नागरिक की सेवा करनी है। उन सपनों को पूरा करना है जो देश की आजादी के मतवालों ने भारत के लिए देखे थे। हमें मिलकर विकसित भारत के सपने को साकार करना है। केवल 10 सालों में हमने भारत को दुनिया की सबसे 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यस्था बना दिया है। वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर रहेगा। हम मिलकर आगे बढ़ेंगे। एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे। तो हर लक्ष्य पाकर रहेंगे।

एक रहेंगे, सेफ रहेंगे पर जनता की मुहर : योगी

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्यालय में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री ब्रजेश पाठक, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह की उपस्थिति में प्रदेश के उपचुनाव में मिली ऐतिहासिक विजय के अवसर पर विजयोत्सव मनाया गया। सभी ने एक–दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की बधाई दी। इसके साथ ही नव निर्वाचित विधायकों का शपथ ग्रहण, एवं पार्टी मुख्यालय पर अभिनन्दन हुआ। विधान सभा अध्यक्ष मा0 सतीश महाना जी ने नव निर्वाचित विधायकगणों को पद गोपनीयता की शपथ दिलायी। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री मोदी जी को राम और राष्ट्र का आराधक बताते हुए, उत्तर प्रदेश की तरफ से भाजपा के "विजयोत्सव" में सात कमल रूपी पुष्प अर्पित करने की बात कही।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने भाजपा की ऐतिहासिक जीत को "विजयोत्सव" बताया। उन्होंने कहा कि आज का दिन अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाराष्ट्र, झारखंड विधानसभा चुनाव और विभिन्न राज्यों में हुए उपचुनाव के परिणाम आए हैं। उन्होंने कहा कि यूपी में 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए, जिनमें बीजेपी गठबंधन ने 7 सीटें जीती हैं। मुख्यमंत्री योगी ने इस ऐतिहासिक विजय का श्रेय देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन को देते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार सुरक्षा, सुशासन और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़कर लोककल्याण के कार्यों को जमीनी धरातल पर उतारने का मार्गदर्शन कर रही है।

यूपी उपचुनाव में भाजपा ने 52 फीसदी से अधिक वोट प्राप्त किया है। ऐसे ही महाराष्ट्र में भाजपा 131 सीटों पर लीड कर रही है। शिवसेना शिंदे गुट 55 सीट, एनसीपी अजीत पवार गुट 40 सीट यानी अकेले एनडीए ने 226 सीटों पर जीत हासिल की है। देश की जनता नकारात्मक और बांटने वाली राजनीति को खारिज कर रही है। इसीलिए हम कह रहे हैं कि बंटेंगे तो कटेंगे, एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। जनता ने राष्ट्रीय अखंडता को मजबूती प्रदान करने के लिए अपना जनादेश दिया है।

ये जीत प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व पर जनता जनार्दन के विश्वास की मुहर है। जनता को अटूट विश्वास है कि मोदी जी के नेतृत्व में उनकी नीतियां, उनके निर्णय देश और समाज के अनुकूल हैं। इस अनुकूलता पर जनता ने मुहर लगाई है। इस सम्पूर्ण विजय के लिए भाजपा के सभी समर्पित कार्यकर्ताओं को, जिन्होंने पूरे समर्पण के साथ डबल इंजन की सरकार की उपब्धियों को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य किया, उन सभी को हृदय से बधाई।

मुख्यमंत्री श्री योगी ने कहा कि देश में विरासत और विकास का बेहतर समन्वय प्रारंभ हुआ है। सुरक्षा, सुशासन और समृद्धि का विशेष समन्वय हम देख पा रहे हैं। जो कभी सपना हुआ करता था आज हकीकत बन गया है। 7 सीटों पर जो जीत हमें मिली है ये प्रदेश की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अभियान को सात कमल के रूप में समर्पित हैं। मीरापुर, कटेहरी, गाजियाबाद, कुंदरकी, खैर, मझवां और फूलपुर की जनता जनार्दन ने यह जनादेश भाजपा के पक्ष में दिया है। खासकर कुंदरकी की जीत राष्ट्रवाद की जीत है। हम सब जनता का आभार व्यक्त करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री योगी ने सभी विजयी प्रत्याशियों को बधाई देते हुए कहा कि यूपी के चुनाव के बारे में मतदान के दिन से ही सपा जैसे अनर्गल प्रलाप कर रही थी, जनता ने उसका करारा जवाब दिया है। कुंदरकी में भाजपा सवा लाख वोटों से जीत रही है, सपा की जमानत जब्त हो रही है, यह राष्ट्रवाद की जीत है। गाजियाबाद में 70 हजार वोटों से जीत हुई है। फूलपुर में बीजेपी 11 हजार वोटों से विजयी हुई है। खैर में 38 हजार से अधिक वोटों से विजय प्राप्त की है, कटेहरी में 35 हजार से अधिक वोटों से वहीं मीरापुर में हमारी सहयोगी रालोद की प्रत्याशी ने 30 हजार से अधिक वोटों से

विजयी हुई हैं। वहीं मझवां में बीजेपी प्रत्याशी 4 हजार से अधिक वोटों से विजयी घोषित हुई हैं।

मुख्यमंत्री श्री योगी ने कहा कि आप सपा के प्रदर्शन का आंकलन कर सकते हैं। सीसामऊ में सपा मात्र 8 हजार वोट से जीती है। 2022 में इस सीट पर हार का अंतर 12 हजार का था। करहल में सपा 2022 में 67 हजार वोटों से जीत हासिल की थी इस बार मात्र 14 हजार का अंतर रह गया है। अगली बार वहां कमल खिलेगा, ये अब बिल्कुल स्पष्ट लग रहा है। सीसामऊ और करहल में यद्यपि हमारी जीत नहीं हुई है, लेकिन बड़ी संख्या में जनता ने राष्ट्रवाद पर भरोसा जताया है इसके लिए इन दोनों विधानसभा क्षेत्र की जनता जनार्दन का विशेष आभार।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि प्रदेश के विधानसभा उपचुनाव मे प्रदेश की महान जनता ने भाजपा नेतृत्व की प्रति विश्वास व्यक्त किया है। समाज को जाति, भाशा, क्षेत्र के नाम पर बांटकर देश को कमजोर करने के शडयंत्र को जनता ने विफल कर दिया। भाजपा की विचारधारा तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार के कार्यों का लेखा–जोखा लेकर भाजपा के कार्यकर्ता जनता के बीच पहुंचे और जनता ने मोदी जी व योगी जी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए भाजपा को विजय का आशीर्वाद दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि जनता ने जो भाजपा को गठबंधन को अपना आशीर्वाद से मिली विजय ऐतिहासिक विजय है। उन्होंने कहा कि 27 का सेमीफाइनल कहने वाली सपा आज चारो खाने चित हो गई है। परिवार डेवेलपमेंट एजेन्सी चलाने वाली सपा का सूपड़ा साफ हो चुका है। इस विजय के लिए भाजपा के पन्ना प्रमुख से लेकर प्रदेश अध्यक्ष जी तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) सहित सभी का अभिनंदन करता हूं।

उपचुनाव से पूर्व जो सपा गुब्बारे की तरह फूली हुई थी, उस गुब्बारे की हवा निकालने का काम जनता ने कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह विजय सेवा, सुशासन, सुरक्षा, विकास की नीति की विजय है।

उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि भाजपा ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में विपक्ष का निगेटिव नेरिटव ध्वस्त हुआ है। उपचुनाव में भाजपा को विजय आशीर्वाद देने के लिए जनता का हृदय से अभिनंदन करता हूं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में उपचुनाव में भाजपा की जीत सबका साथ–सबका विकास और सबके विश्वास की नीति की जीत है।

कुंभ की समरसता

हृदयनारायण दीक्षित

कुम्भ पर्व के शुभागमन की पगध्वनि सुनाई पड़ रही है। साहित्यकारों की गैलरी का नवीनीकरण हो रहा है। प्रतिष्ठित साहित्यकारों के ऑडियो और वीडियो सुने व देखे जा सकेंगे। इसके अलावा भी तमाम तैयारियां चल रही हैं। सारी दुनिया से प्रयागराज के महासंगम में करोड़ों श्रद्धालु आते हैं। लेकिन सबसे बड़ी खबर संतों की है। महाकुम्भ में 370 दलितों को महंत, पीठाधीश्वर जैसी प्रतिष्ठित जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी। यह कार्य जूना अखाड़ा के पीठाधीश्वर महेन्द्रानंद गिरि को करना है। इस खबर से सामाजिक समरसता के प्रेमी लोगों में भारी प्रसन्नता है। लेकिन भारत के समाज को बांटने का काम देशव्यापी है। समाज विभाजक तत्वों ने अनेक मोर्चे खोल रखे हैं। अल्पसंख्यकों को भारतीय समाज से अलग रहने के लिए भड़काया जा रहा है। जाति विभाजन चिन्ता का विषय है। आदिवासी हिन्दू समाज के अविभाज्य अंग हैं। अनुसूचित जातियों को भी भड़काया जा रहा है। उन्हें भी मूल धारा से अलग करने के प्रयास हो रहे हैं। धर्मांतरण कराने वाली शक्तियां भी सक्रिय हैं। राष्ट्रीय एकता को तोड़ने की कोशिशें हैं। चुनौती बड़ी है। परस्पर आत्मीयता बढ़ाने के लिए सामाजिक समरसता अपरिहार्य है। दलित वंचित बंधुओं से संवाद आवश्यक है। सामाजिक समरसता को हर हाल में बचाना और बढ़ाना राष्ट्रीय कर्तव्य है।

सामाजिक समरसता अपरिहार्य है। संत आगे आए हैं। भारत की संत परंपरा अद्वितीय है। रामानुज, रामानंद तुलसीदास, कबीर, रविदास, सूरदास सहित अनेक संतों ने भारतीय ज्ञान परंपरा व भाईचारे को समृद्ध किया है। शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन को विश्व व्यापी बनाया है। इतिहास के मध्यकाल में संतों के प्रवाह ने आंदोलन जैसा रूप धारण किया था। मार्क्सवादी शिवकुमार मिश्र ने भी लिखा है कि, "भक्ति आंदोलन में कोटि–कोटि साधारण जन ही शिरकत नहीं करते, समग्र राष्ट्र की शिराओं में इस आंदोलन की ऊर्जा स्पंदित होती है। जबरदस्त ज्वार उफनाता है कि उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सब मिलकर एक हो जाते हैं, सब एक दूसरे को प्रेरणा देते हैं, एक दूसरे से प्रेरणा लेते हैं। अपनी आध्यात्मिक तृषा बुझाते हैं, एक नया आत्मविश्वास, आत्मसम्मान के साथ जिंदा रहने की, शक्ति पाते हैं"। (भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य, पृष्ठ 11)

कुम्भ में दलितों को सम्मान देने के प्रयास का स्वागत किया जाना चाहिए। राजनीति के क्षेत्र में सामाजिक समता और सामाजिक न्याय की बातें चलती हैं। राजनीतिक दल जाति समाप्ति के आदर्श दिखाते हैं। वह जातियों को स्थिर इकाई मानते हैं। लेकिन अपनी जाति की श्रेष्ठता बघारते हैं। जाति सामाजिक बुराई है। गांधी, आम्बेडकर, लोहिया, डॉक्टर श्याम प्रसाद मुखर्जी जैसे वरिष्ठ नेता जाति के खात्मे की बात आगे बढ़ाते रहे हैं। डॉ. आम्बेडकर ने कहा था कि, "जाति को खत्म करना जरूरी है। जाति खत्म होकर रहेगी। इसलिए कि वह अप्राकृतिक है।" भारतीय चिन्तन दर्शन में जाति वर्ग जैसे शब्दों का उल्लेख नहीं है। प्रत्येक मनुष्य अनूठा है। अद्वितीय है। अनंत संभावनाओं से युक्त है। उसकी प्रतिभा का आदर और सदुपयोग करना राष्ट्र राज्य का दायित्व है। जो लोग जाति का खात्मा चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि पुराने सामाजिक वर्गों की परवाह न करते हुए समग्र समाज के लिए काम करें। व्यक्ति में अनेक क्षमताएं होती हैं। सब एक जैसे नहीं हो सकते। किसी की क्षमता विस्मित करती है। किसी की क्षमता निराश करती है। सब अपने हैं। जाति पंथ के भेद का उपचार अलगावाद नहीं है। कुछ व्यक्ति अपनी मान्यताओं के प्रति आग्रही होते हैं। समाज का एक वर्ग भिन्न रास्ता अपनाता है। परस्पर टकराव होता है। सामाजिक समरसता सभी कठिनाइयों का समाधान है।

भारतीय दर्शन में, उपनिषदों सहित सभी परवर्ती ग्रन्थों में रस शब्द की महत्ता है। रस जीवन का प्रवाह है। रस का अनुभव व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। तैत्तरीय उपनिषद के ऋषि ने ब्रह्म को रस कहा है रसो–वै सह। प्रत्येक व्यक्ति के अंतरंग में रस प्रवाहित होता है। शंकराचार्य ने लिखा है, "खट्टा मीठा आदि तृप्तिदायक पदार्थ लोक में रस नाम से प्रसिद्ध है। ऐसे रस से युक्त पुरुष आनंदी हो जाता है।" प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव भिन्न–भिन्न होता है। बहुत लोगों को यह जीवन संघर्ष लगता है। बुद्ध के अनुसार यह जीवन दुखमय है। किसी–किसी को यह जीवन ईश्वर का प्रसाद लगता है। सबके रस भिन्न–भिन्न होते हैं। समान भाव, समान रस संपूर्ण समाज को आनंदित करते हैं। इसे समरसता कहते हैं। रस आक्रामक नहीं होता। सामाजिक समरसता और समता पर्यायवाची नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति की भाषा, भावना, प्रीति, अभिव्यक्ति और क्षमता भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है। समरसता के मिलते ही समता अपने आप मिल जाती है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों को सामाजिक विषमता के कारण बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ी हैं। संविधान निर्माताओं और राष्ट्र राज्य ने ऐसे वर्गों के लिए तमाम रक्षोपायों की व्यवस्था की है। स्वाभाविक ही इस वर्ग के लोगों में सुंदर भविष्य की कामना है। इन्हें मिल रही सुविधाएं औचित्यपूर्ण हैं, लेकिन परस्पर समरसता नहीं है। उन्हें अपने बीच का सरकारी अफसर, नेता, विधायक, सांसद, मंत्री और राज्य प्रमुख अच्छा लगता है।

राष्ट्रपति का पद सबसे बड़ा है। वर्तमान राष्ट्रपति प्रत्येक तरह से सक्षम हैं। समाज के प्रति उनके कामकाज की प्रशंसा हुई है। कमजोर वर्गों को लगता है कि राष्ट्रपति इनके घर का है। यह विचार प्रेरक है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही साधु संतों का विशेष सम्मान रहा है। गरीबों वंचितों के बीच से कोई प्रधान निर्वाचित होते हैं तो उन्हें खुशी होती है। लेकिन संतों का पद बड़ा है। इन वर्गों से संत महंत का बनना वाकई किसी बड़े सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत है। अब राष्ट्र जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां वंचित दलित उपस्थित न हों। उन्हें सम्मानित करने का यह कार्यक्रम अद्वितीय और प्रशंसनीय है।

कुम्भ में दुनिया के लगभग 100 देशों के निवासी आते हैं। संतों महंतों का यह विशेष कार्यक्रम कुम्भ में दर्शनीय होगा। यह कार्यक्रम सामाजिक समरसता का संगम होगा। यह विश्वस्तरीय संगमन है।

कुम्भ में दुनिया के लगभग 100 देशों के निवासी आते हैं। संतों महंतों का यह विशेष कार्यक्रम कुम्भ में दर्शनीय होगा। यह कार्यक्रम सामाजिक समरसता का संगम होगा। यह विश्वस्तरीय संगमन है। कुम्भ अंतर्राष्ट्रीय आश्चर्य है। बिना बुलाए करोड़ों लोगों की उपस्थिति विस्मित करती है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में अमृतरस से भरा कुम्भघट छलकता है। सारी दुनिया के जिज्ञासु, आस्तिक और नास्तिक भी आते हैं। भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले भी। भिन्न–भिन्न उपासना पद्धति वाले भी। तब सारी दिशाएं अनुकूल होकर कुम्भ का स्वागत करती हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व्यक्तिगत रूप से कुम्भ व्यवस्था के प्रति सजग हैं। योगी जी की सरकार स्वागत की भूमिका में भी है। प्रयाग में सैकड़ो वर्ष पहले (644 ई.) राजा हर्षवर्धन गरीबों के बीच धन दान करते थे। चीनी यात्री ह्वेन सांग ने इसकी प्रशंसा की है। यूनेस्को ने काफी समय पहले ही कुम्भ को विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व का आयोजन घोषित किया था। संतों के इस निर्णय का स्वागत करना चाहिए। आशा है कि कुम्भ से सारी दुनिया को संदेश जाएगा कि भारत ने समाज को बांटने वाली शक्तियों के विरुद्ध निर्णायक संग्राम छेड़ दिया है। कुम्भ से चला 'सामाजिक समरसता' का संदेश पूरे देश में प्रवाहित होगा। सामाजिक समरसता के संगम की प्रतीक्षा है।

‘वन रैंक वन पेंशन’ के 10 वर्ष: एक रिपोर्ट

‘वन रैंक वन पेंशन’ योजना से 25 लाख से अधिक भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को मिला लाभ

‘वन रैंक वन पेंशन’ सही मायनों में हमारे भूतपूर्व सैनिकों और पूर्व-सैन्य कर्मियों के साहस एवं बलिदान के सम्मान में दी गई एक श्रद्धांजलि थी, जो अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना जीवन न्यौछावर करते हैं। वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) को लागू करने का निर्णय लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करने और अपने सैनिकों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता प्रकट करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था— प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

भारत सरकार ने पेंशन भत्तों में लंबे समय से चली आ रही असमानताओं को दूर करने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) योजना शुरू की, यह एक ऐसा निर्णय है जो अपने सेवानिवृत्त होने सैन्य कर्मियों के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव ला रहा है। सेवानिवृत्त सैनिकों ने वर्षों तक न केवल युद्ध के मैदान में लड़ाई लड़ी थी, बल्कि अपनी सेवा देने के बाद के जीवन में भी समान अधिकार के लिए संघर्ष किया, विशेषकर जब पेंशन में मिलने वाले लाभ की बात आई। केंद्र सरकार ने वन रैंक वन पेंशन की शुरुआत के साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए एक साहसिक कदम उठाया कि जिन सैनिकों ने अटूट समर्पण के साथ देश की सेवा की है, उनके साथ उचित व्यवहार किया जाएगा।

इस पहल ने उन सिपाहियों के बलिदान एवं सेवा का सम्मान करने की एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता को व्यक्त किया, जिन्होंने देश की रक्षा की थी। इस शुरुआत ने पूर्व सैनिकों को वह सम्मान और वित्तीय सुरक्षा देने का वादा किया था, जिसके वे हकदार थे।

अब वन रैंक वन पेंशन योजना वर्ष 2024 में अपने 10 साल पूरे कर रही है, ऐसे में इस योजना से सशस्त्र बल समुदाय को होने वाले तमाम फायदों पर विचार करना आवश्यक है। इस पहल ने न केवल वर्तमान और पूर्व सेवानिवृत्त सैनिकों के बीच पेंशन के अंतर को पाट दिया है, बल्कि अपने भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण हेतु देश के समर्पण को भी विस्तारित किया है। ओआरओपी ने पेंशन लाभों में समानता और निष्पक्षता लाकर भारत सरकार तथा देश के सैन्य कर्मियों के बीच संबंधों को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वन रैंक वन पेंशन योजना की शुरुआत लाखों पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के लिए परिवर्तनकारी साबित हुई है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि सेवानिवृत्ति के बाद के पूरे जीवन में सैन्य कर्मियों के साथ सम्मान के साथ व्यवहार किया जाएगा।

‘वन रैंक वन पेंशन’ का अवलोकन

इसके मूल में जाकर देखें तो वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) एक सरल लेकिन गहन विचार है। समान रैंक और समान सेवा अवधि के साथ सेवानिवृत्त होने वाले सैन्य कार्मिकों को उनकी सेवानिवृत्ति की

तिथि की परवाह किए बिना समान पेंशन मिलनी चाहिए। यह सिद्धांत मुद्रास्फीति, वेतनमान में परिवर्तन और समय के साथ सेवा शर्तों की बदलती प्रकृति के कारण पूर्व सैनिकों के समक्ष पेंशन लाभों में आने वाली असमानता को दूर करता है।

यह योजना वर्तमान और सेवानिवृत्त कर्मियों के बीच पेंशन अंतर को समय-समय पर पाटना सुनिश्चित करके पूर्व सैनिकों तथा उनके परिवारों को सीधे लाभ पहुंचाती है। साल 2014 में वन रैंक वन पेंशन का सफल कार्यान्वयन न केवल एक नीतिगत बदलाव था, बल्कि देश की सेवा करने वालों के प्रति सरकार की कृतज्ञता व सम्मान प्रकट करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी था।

वन रैंक वन पेंशन योजना की मुख्य विशेषताएं

केंद्र सरकार द्वारा 7 नवंबर, 2015 को जारी किये गए आदेश ने सभी सेवानिवृत्त रक्षा कर्मियों के लिए एक समान पेंशन प्रणाली लागू की गई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि समान रैंक और समान सेवा

अवधि के साथ समान पेंशन लाभ मिलेगा। इस नीति के प्राथमिक तत्वों में शामिल हैं:

1. **पेंशन का पुनर्निर्धारण:** सभी पूर्व पेंशनभोगियों की पेंशन 2013 में सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की पेंशन के आधार पर 1 जुलाई, 2014 से पुनः निर्धारित की गई है। इससे पेंशन के लिए एक नया मानक स्थापित हुआ, जिसमें सभी सेवानिवृत्त हुए सैनिकों को उनकी सेवा के लिए समान लाभ मिलेगा।
2. **आवधिक संशोधन:** पेंशन को हर पांच साल में पुनः निर्धारित किया जाएगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह वेतन और पेंशन संरचना में परिवर्तन को प्रतिबिंबित करती रहे।
3. **बकाया भुगतान:** पेंशन की बकाया राशि का भुगतान समान अर्ध-वार्षिक किश्तों में किया जाना था, हालांकि पारिवारिक पेंशनभोगियों और वीरता पुरस्कार विजेताओं के लिए बकाया राशि का भुगतान एक ही किश्त में किया गया।
4. **औसत से अधिक पेंशन की सुरक्षा:** औसत से अधिक पेंशन पाने वाले कार्मिकों की पेंशन सुरक्षित रखी जाती है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वे ओआरओपी के लाभ से वंचित न हो जाएं।
5. **सभी पूर्व सैनिकों का समावेशन:** यह आदेश 30 जून, 2014 तक सेवानिवृत्त हुए सभी कार्मिकों हेतु लागू था और इसमें पारिवारिक पेंशनभोगियों सहित सभी रैंकों के लिए पेंशन संशोधन के उद्देश्य से एक सशक्त ढांचा प्रदान किया गया था।

लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करना

वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) की मांग लंबे समय से चला आ रहा एक मुद्दा था, जो 40 वर्षों से अधिक समय से लंबित था। कई सरकारी समितियों और आयोगों ने इस मामले में कार्य किया था, लेकिन हर बार मुख्य रूप से वित्तीय बाधाओं व प्रशासनिक जटिलताओं के कारण प्रस्ताव को खारिज कर दिया जाता था। तीसरा केंद्रीय वेतन आयोग इस मुद्दे पर पहला ऐसा आयोग था, जिसने मामले को गंभीरता से समझा तथा पेंशन के लिए अर्हकारी सेवा में महत्व की सिफारिश की। इन वर्षों में केपी सिंह देव समिति (1984) और शरद पवार समिति (1991) जैसे समूहों ने भी इस मामले का अध्ययन किया, लेकिन ये भी कोई निश्चित समाधान पेश करने में विफल रहे। इन असफलताओं के बावजूद मांग लगातार बनी रही और रक्षा संबंधी स्थायी समिति तथा अन्य मंचों पर इसके कार्यान्वयन की वकालत जारी रही।

16वीं लोकसभा के आते-आते और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने पूर्व सैनिकों की मांगों का सम्मान करने का निर्णय लिया। साल 2014 के बजट में इस योजना के कार्यान्वयन के लिए 1,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे और फिर व्यापक विचार-विमर्श के बाद सरकारी आदेश 7 नवंबर, 2015 को पारित हो गया था, जिसके अंतर्गत 30 जून, 2014 तक सेवानिवृत्त हुए सभी सैन्य कर्मियों को शामिल किया गया था।

पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों पर योजना का प्रभाव

ओआरओपी योजना से 25 लाख से अधिक भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को लाभ मिला है, जिससे भूतपूर्व सैनिक समुदाय को अत्यंत आवश्यक वित्तीय सुरक्षा प्राप्त हुई है। इस योजना से न केवल सेवानिवृत्त सैन्य कर्मियों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, बल्कि राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा का सम्मान भी सुनिश्चित हुआ है। कई भूतपूर्व रक्षा कर्मियों के लिए यह उनके योगदान की लंबे समय से प्रतीक्षित मान्यता थी, जो उनके बलिदान और सेवानिवृत्ति के बाद प्राप्त पुरस्कारों के बीच की खाई को पाटती थी।

ओआरओपी का आवश्यक रूप सामाजिक एवं भावनात्मक महत्व भी है। इसने भारत सरकार और इसके सैन्य कर्मियों के बीच सशक्त संबंध स्थापित करने में अपना योगदान दिया है, जो देश की संप्रभुता की रक्षा एवं सेवा करने वाले लोगों के प्रति राष्ट्र की वचनबद्धता को दर्शाता है। सैनिकों के ऐसे परिवारों के लिए जिनमें से तो कई अपने प्रियजनों के बलिदान के साथ जी रहे हैं, यह नीति पूर्णता और स्वीकृति की भावना लेकर आई है।

भारत सरकार और इसके सैन्य कर्मियों के बीच सशक्त संबंध स्थापित करने में अपना योगदान दिया है

योजना का भविष्य: ओआरओपी की निरंतर प्रासंगिकता

एक दशक पहले जिस तरह से आज के ही दिन ओआरओपी को लागू किया गया था, तो रक्षा बलों के लिए इस नीति के निरंतर महत्व को समझना महत्वपूर्ण है। जैसाकि स्वयं प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जोर देते हुए कहा है कि ओआरओपी योजना केवल पेंशन से ही संबंधित नहीं है, बल्कि यह सशस्त्र बलों को मजबूत करने और राष्ट्र की निःस्वार्थ सेवा करने वालों के कल्याण को बढ़ाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि भी है।

हर पांच साल में पेंशन का पुनर्निर्धारण यह सुनिश्चित करता है कि यह योजना पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों की बढ़ती आवश्यकताओं के अनुकूल बनी रहे। यह देश के सैन्य कर्मियों की चिंताओं को दूर करने के लिए सरकार के समर्पण का एक शक्तिशाली हस्ताक्षर भी है, जिनमें से कई भारत की सीमाओं तथा हितों की रक्षा में सबसे आगे हैं।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि जब हम वन रैंक वन पेंशन के प्रभाव पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस नीति ने भारत के भूतपूर्व रक्षाकर्मियों को बहुत आवश्यक लाभ और सम्मान प्रदान किया है। निरंतर परिशोधन व आवधिक संशोधनों के साथ वन रैंक वन पेंशन योजना अपने सशस्त्र बलों के लिए देश के समर्थन की आधारशिला बने रहने का वादा करती है और यह सुनिश्चित करती है कि भारत की संप्रभुता की रक्षा करने वाले सैन्य नायकों को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद भी सम्मानित किया जाता है तथा उनकी देखभाल की जाती है। ■

सरकार की उपलब्धियां

कैबिनेट ने 2024-25 में भारतीय खाद्य निगम में 10,700 करोड़ रुपये की इक्विटी डालने को मंजूरी दी

इस निर्णय का उद्देश्य कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देना और देश भर के किसानों का कल्याण सुनिश्चित करना है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने छह नवंबर को भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) में वित्तीय वर्ष 2024-25 में कार्यशील पूंजी के लिए 10,700 करोड़ रुपये की इक्विटी डालने को मंजूरी दे दी। इस निर्णय का उद्देश्य कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देना और देश भर के किसानों का कल्याण सुनिश्चित करना है। यह रणनीतिक कदम किसानों को समर्थन देने और भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एफसीआई ने 1964 में 100 करोड़ रुपये की अधिकृत पूंजी और 4 करोड़ रुपये की इक्विटी के साथ अपनी यात्रा शुरू की थी। एफसीआई के संचालन में कई गुना वृद्धि हुई, जिसके परिणामस्वरूप फरवरी, 2023 में अधिकृत पूंजी 11,000 करोड़ रुपये से बढ़कर 21,000 करोड़ रुपये हो गई। वित्तीय वर्ष 2019-20 में एफसीआई की इक्विटी 4,496 करोड़ रुपये थी, जो वित्तीय वर्ष 2023-24 में बढ़कर 10,157 करोड़ रुपये हो गई। अब, भारत सरकार ने एफसीआई के लिए 10,700 करोड़ रुपये की महत्वपूर्ण इक्विटी को मंजूरी दी है, जो इसे वित्तीय रूप से मजबूत करेगी और इसके परिवर्तन के लिए की गई पहलों को एक बड़ा बढ़ावा देगी।

एफसीआई न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खाद्यान्नों की खरीद, रणनीतिक खाद्यान्न भंडार के रखरखाव, कल्याणकारी उपायों के लिए खाद्यान्नों के वितरण और बाजार में खाद्यान्नों की कीमतों के स्थिरीकरण के माध्यम से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

गौरतलब है कि एमएसपी आधारित खरीद और एफसीआई की परिचालन क्षमताओं में निवेश के प्रति सरकार की दोहरी प्रतिबद्धता, किसानों को सशक्त बनाने, कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने और राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक सहयोगात्मक प्रयास का प्रतीक है। ■

2024-25 के दौरान 1647.05 लाख टन रिकार्ड खरीफ खाद्यान्न उत्पादन होने का अनुमान

खरीफ चावल का उत्पादन 1199.34 लाख टन अनुमानित है जो पिछले वर्ष के खरीफ चावल उत्पादन से 66.75 लाख टन अधिक एवं औसत खरीफ चावल उत्पादन से 114.83 लाख टन अधिक है

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा पांच नवंबर को जारी विज्ञप्ति के अनुसार वर्ष 2024-25 के दौरान कुल खरीफ खाद्यान्न उत्पादन 1647.05 लाख टन अनुमानित है जो पिछले वर्ष के खरीफ खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 89.37 लाख टन अधिक एवं औसत खरीफ खाद्यान्न उत्पादन की तुलना में 124.59 लाख टन अधिक है। चावल, ज्वार और मक्का के अच्छे उत्पादन के कारण खाद्यान्न उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि देखी गई।

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए मुख्य कृषि फसलों (केवल खरीफ) के उत्पादन के प्रथम अग्रिम अनुमान जारी कर दिए गए हैं।

प्रथम अग्रिम अनुमान के अनुसार वर्ष 2024-25 के दौरान खरीफ चावल का उत्पादन 1199.34 लाख टन अनुमानित है जो पिछले वर्ष के खरीफ चावल उत्पादन से 66.75 लाख टन अधिक एवं औसत खरीफ चावल उत्पादन से 114.83 लाख टन अधिक है। खरीफ मक्का का उत्पादन 245.41 लाख टन एवं खरीफ पोषक/मोटे अनाजों का उत्पादन 378.18 लाख टन अनुमानित है। इसके अलावा, 2024-25 के दौरान कुल खरीफ दलहनों का उत्पादन 69.54 लाख टन अनुमानित है।

2024-25 के दौरान देश में कुल खरीफ तिलहन उत्पादन 257.45 लाख टन अनुमानित है जोकि पिछले वर्ष के खरीफ तिलहन उत्पादन की तुलना में 15.83 लाख टन अधिक है। वर्ष 2024-25 के लिए खरीफ मूंगफली का उत्पादन 103.60 लाख टन एवं सोयाबीन का उत्पादन 133.60 लाख टन अनुमानित है। 2024-25 के दौरान देश में गन्ने का उत्पादन 4399.30 लाख टन अनुमानित है। कपास का उत्पादन 299.26 लाख गांठें (प्रति गांठ 170 किग्रा.) अनुमानित है। पटसन एवं मेस्ता का उत्पादन 84.56 लाख गांठें (प्रति गांठ 180 किग्रा) अनुमानित है।

विभिन्न खरीफ फसलों के उत्पादन निम्न हैः

- **कुल खरीफ खाद्यान्न – 1647.05 लाख टन (रिकार्ड)**
- **चावल – 1199.34 लाख टन (रिकार्ड)**
- मक्का – 245.41 लाख टन (रिकार्ड)
- पोषक/मोटे अनाज – 378.18 लाख टन
- **कुल दलहन – 69.54 लाख टन**
- तूर – 35.02 लाख टन
- उड़द – 12.09 लाख टन
- मूंग – 13.83 लाख टन
- **कुल तिलहन – 257.45 लाख टन**
- मूंगफली – 103.60 लाख टन
- सोयाबीन – 133.60 लाख टन
- गन्ना – 4399.30 लाख टन
- कपास – 299.26 लाख गांठें (प्रति गांठ 170 कि. ग्रा.)
- पटसन एवं मेस्ता – 84.56 लाख गांठें (प्रति गांठ 180 कि. ग्रा.) ■

स्वावलंबन से भारतीय युवाओं का भविष्य उज्ज्वल: श्रीधर वेम्बु

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 70वें राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर के परिसर में भारतीय उद्योगपति श्रीधर वेम्बू ने किया। इस अवसर पर अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो राजशरण शाही, नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महामंत्री डॉ वीरेंद्र सोलंकी, अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री कुमारी शालिनी वर्मा, अभाविप राष्ट्रीय अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष व गोरखपुर के महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, स्वागत समिति महामंत्री श्री कामेश्वर सिंह, अभाविप गोरक्ष प्रांत के अध्यक्ष डॉ राकेश कुमार सिंह व अभाविप गोरक्ष प्रांत मंत्री श्री मयंक राय मंच पर उपस्थित रहे।

2023–24 में 55,12,470 सदस्यता

अभाविप के निर्वतमान राष्ट्रीय महामंत्री श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने महामंत्री प्रतिवेदन राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रस्तुत करते समय यह आंकड़ा रखा कि विद्यार्थी परिषद ने इस वर्ष सदस्यता के सभी पुराने आंकड़ों को पार कर वर्ष 2023–24 में 55,12,470 सदस्यता की है। विद्यार्थी परिषद की 76 वर्ष की संगठनात्मक यात्रा में यह संख्या सर्वाधिक है।

मुख्य अतिथि के रूप में भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं जोहो कॉरपोरेशन के सीईओ श्री श्रीधर वेम्बू ने कहा कि भारत को आज स्वावलंबन की ओर अग्रसर

अभिनन्दन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन के पहले दिन देशभर के विभिन्न हिस्सों से गोरखपुर पहुंचे विद्यार्थियों से गोरखपुर विविधता के रंग में रंग चुका है। एक साथ सभी प्रतिनिधियों ने वंदे मातरम गायन किया। अपने प्रांत के स्थानीय परिधानों में प्रतिनिधियों की उपस्थिति देखते ही बन रही है। उत्तर प्रदेश के पारंपरिक वाद्य यंत्रों नगाडे, ढोल, मंजीरा आदि द्वारा विद्यार्थी प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया। प्रतिनिधियों के स्वागत में आजमगढ़ का धोबिया लोकनृत्य, बमरसिया नगाड़ा, अवध का फरूवाही लोकनृत्य तथा काशी का डमरू वादन से उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति के दर्शन अधिवेशन स्थल पर हुए।

होने की आवश्यकता है। आत्मविश्वास, आत्म प्रेरणा एवं आत्म–अनुशासन व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाने में महती भूमिका निभाते हैं। इसमें से सबसे महत्वपूर्ण आत्म–अनुशासन के गुण विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं में परिलक्षित होते हैं। हमें असफलताओं से कभी भयभीत नहीं होना चाहिए, इससे संकल्प शक्ति मिलती है और अर्जित इस शक्ति के साथ जब दृढ़ विश्वास के साथ व्यक्ति कार्य करता है तब वह निश्चित रूप में सफलता प्राप्त करता है। आज हम विकसित भारत की संकल्पना की बात करते हैं, इसके हेतु केवल एक जिले को नहीं अपितु समूचे भारत के सभी जिलों को विकसित होना पड़ेगा। संस्कृत में भी कहा गया है 'धर्मस्य मूलं अर्थः', जिसका मतलब धर्म का आधार अर्थ है। यदि आर्थिक मजबूती नहीं रहेगी तो धर्म भी पूर्ण रूप से नहीं रह पाएगा।

भारत को नवाचार का केंद्र बनाने का समय आ गया है। इसके लिए शिक्षा, तकनीकी विकास, और सामाजिक समर्पण को प्राथमिकता देनी होगी। साथ ही उद्यमिता काफी महत्वपूर्ण है और इसी के माध्यम से स्वावलंबन की ओर हम आगे बढ़ सकेंगे। संतुलन, समरसता और सद्भाव से ही हम विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे किंतु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के संवर्धन से जुड़ा होना चाहिए और प्रकृति के सामंजस्य के साथ चलना चाहिए। सरकारें सभी को नौकरियां प्रदान नहीं कर सकती है, केवल इसके हेतु सुलभ वातावरण निर्मित कर सकती है इसलिए स्वावलंबन काफी महत्वपूर्ण है। मुझे आज इस कार्यक्रम में आकर काफी प्रसन्नता हुई और इस बात का भी हर्ष है कि अभाविप का कार्यकर्ता निरंतर इस पथ पर आगे

बढ़ते हुए समाज जागरण का कार्य कर रहा है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नवनिर्वाचित महामंत्री श्री वीरेंद्र सोलंकी ने कहा कि भारतीय एकात्मकता के लिए अभाविप कार्यकर्ता निरंतर प्रयास कर रहे हैं। आज 76 वर्षों की अभाविप बहुआयामी वटवृक्ष का रूप ले चुकी है, जो समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिए अभाविप कार्यकर्ता अपने रचनात्मक प्रयासों द्वारा परिवर्तन लाने का काम कर रहे हैं। विद्यार्थी परिषद में सामान्य से सामान्य कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं, इसका उदाहरण मैं स्वयं हूं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष गोरखपुर के महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव ने कहा कि गोरखपुर की भूमि आध्यात्मिक विरासत का केंद्र रही है। अधिवेशन में स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीधर वेम्बू जी का स्वागत करता हूं और यह काफी सुखद अनुभूति है। श्रीधर वेम्बू ने दुनिया में यह स्थापित किया है कि ग्रामीण परिवेश की उपज वैश्विक स्तर पर अपनी धाक जमा सकता है।

प्रदर्शनी : राष्ट्रीय एकात्मता का दर्शन

विहिप के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव ने विद्यार्थी परिषद अधिवेशन में प्रदर्शनी उद्घाटन कार्यक्रम में कहा कि अभाविप का यह राष्ट्रीय अधिवेशन राष्ट्र की एकात्मकता का दर्शन कराता है। जहां संपूर्ण विश्व मात्र अपने अधिकारों की ही चर्चा करते हुए संघर्ष कर रहा है, वहां विद्यार्थी परिषद देश के विभिन्न शिक्षण परिसरों में युवाओं के बीच कर्तव्यभाव जागरण का कार्य करती है। भारत के युवाओं ने देश को महत्वपूर्ण दिशा दी है। स्वामी विवेकानंद, देवी अहिल्याबाई होलकर, दीनदयाल उपाध्याय ने युवावस्था में समाज जागरण का जो कार्य किया है वह अनुकरणीय है। महर्षि अवैद्यनाथ के साथ मुझे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, राष्ट्र एकात्मकता को लेकर उनके चिंतन में मुझे बहुत प्रभावित किया है। आज यह दूसरा मौका है जब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में मुझे सम्मिलित होने का मौका मिला है और यह मेरे लिए हर्ष का विषय है।

शिक्षा को सर्वसमावेशी तथा गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए प्रयास आवश्यक: प्रो. राजशरण शाही

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की केंद्रीय कार्यसमिति बैठक की शुरुआत राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल तथा राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री आशीष चौहान ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संवाद भवन में माँ सरस्वती और स्वामी विवेकानंद के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया, तत्पश्चात केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों ने सामूहिक वंदे मातरम गायन किया।

अभाविप द्वारा महेश्वर से पुण्यश्लोका अहिल्याबाई होलकर के त्रिशताब्दी वर्ष पर निकाली गई मानवंदना यात्रा प्रयागराज, अयोध्या से होते हुए अधिवेशन स्थल पर पहुंचेगी। यात्रा के माध्यम से लोकमाता द्वारा भारतीय सांस्कृतिक विशिष्टता के पुनरुत्थान हेतु किए गए प्रयासों को जनसामान्य तक पहुंचाया जाएगा। कल राष्ट्रीय अधिवेशन के निमित्त प्रदर्शित किए जाने वाली प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया जाएगा।

बैठक में शिक्षा, समाज से जुड़े विषयों पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई। शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता व शुल्क वृद्धि, मिलावटी खाद्य पदार्थों की समस्या, अन्तरराष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता प्रभाव, मणिपुर हिंसा जैसे विषयों पर कुल पांच प्रस्तावों पर इस केन्द्रीय कार्यसमिति बैठक में संवाद हुआ। ये पांच प्रस्ताव 22–24 नवंबर के मध्य राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित किए जाएंगे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजशरण शाही ने कहा कि गोरखपुर शौर्य की भूमि है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गोरखपुर के शूरवीरों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गोरखपुर का राजनैतिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। नाथ पंथ का देश में सामाजिक समरसता के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सस्ती व सुलभ बनाने के लिए प्रभावी प्रयास की आवश्यकता है। शिक्षा को सर्वसमावेशी व सुलभ होगी तो देश का सामान्य से सामान्य विद्यार्थी बेहतर कर सकेगा। अभाविप की यह केंद्रीय कार्यसमिति बैठक सकारात्मक बदलाव को दिशा दिखाने वाली है।

विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता देश के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु कार्य कर रहे हैं। देश की युवा शक्ति आशाओं से युक्त है, यह युवा शक्ति भारत में सकारात्मक बदलाव की वाहक बनेगी। मणिपुर राज्य में शांति व्यवस्था बहाल करने हेतु केंद्र एवं राज्य सरकार को संयुक्त रूप से शीघ्रता से प्रयास करने होंगे। गोरखपुर वैचारिक केन्द्र के रूप में अनेक अवसरों पर देश का मार्ग प्रशस्त करने वाला रहा है, विद्यार्थी परिषद का गोरखपुर राष्ट्रीय अधिवेशन देश के विद्यार्थियों के नेतृत्व में भारत केन्द्रित वैचारिकी द्वारा बदलाव का वाहक बनेगा।

विद्यार्थी परिषद का सौभाग्यशाली कार्यकर्त्ता रहा: योगी

प्राध्यापक यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार अर्पण समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महंत श्री योगी आदित्यनाथ ने इस पुरस्कार से सम्मानित दीपेश नायर को पुरस्कृत किया। यह पुरस्कार श्रवण बाधितों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षणिक केंद्र (TEACH) के सह–संस्थापक श्री दीपेश नायर को 'श्रवण दिव्यांगजनों में कौशल विकास व शिक्षा के माध्यम से जीवन उद्देश्य और उत्साह उत्पन्न करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु सम्मानित किया गया है।

प्राध्यापक यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार अर्पण समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महंत श्री योगी आदित्यनाथ ने संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी परिषद के इस राष्ट्रीय अधिवेशन कार्यक्रम में मैं अपने गृह जनपद गोरखपुर में सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करता हूं। मुझे इस बात का हर्ष है कि प्राध्यापक यशवंतराव केलकर पुरस्कार के प्राप्तकर्ता दीपेश नायर ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने समाज के उस वर्ग के लिए कार्य किया है जो सामान्यत: उपेक्षित रह जाता है। यदि दिव्यांगों को प्रशिक्षित किया जाए तो वह भी आगे बढ़ सकता है, ईश्वर जो भी जीवन में कमी करता है उसकी पूर्ति वह अवश्य करता है। आपको सम्मान दिए जाने से इस पुरस्कार का गौरव बढ़ा है।

उन्होंने आगे कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ऐसा संगठन है जो युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है, मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मुझे भी अपने विद्यार्थी जीवन में अखिल विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने का अवसर मिला था। जहां युवा को सही दिशा मिलती है, वहां वह अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने का कार्य किया है। समय के प्रवाह के साथ आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है और तकनीकी और विज्ञान को भी साथ रखना उतना ही महत्वपूर्ण है। नवीन प्रौद्योगिकी का सही से प्रयोग हो यह काफी महत्वपूर्ण है, तकनीक का सही उपयोग जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है तो नकारात्मक प्रयोग समस्या भी खड़ी करता है। राष्ट्रधर्म ही हमारे लिए सर्वोपरि धर्म है और यही एक लक्ष्य जब लेकर हम चलेंगे तो हम मानवता के कल्याण के मार्ग को प्रशस्त कर पाएंगे। याद रखना राष्ट्र धर्म के निर्वाह में जो चुनौतियां है, उनका सामना परस्पर एकता से ही संभव है। परस्पर एक–दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए ही यह हो पाएगा और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इस ऊर्जावान सत्य के बल पर, छात्रशक्ति के बल पर क्योंकि यही छात्रशक्ति, राष्ट्रशक्ति है और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कहती है कि युवा कल का नहीं आज का नागरिक है और आज का नागरिक है और यह आज का नागरिक है तो उसे आज के दिन पर ही उसे राष्ट्रधर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाकर हो पाएगा।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा प्रत्येक वर्ष दिए जाने वाले यशवंतराव केलकर पुरस्कार के प्राप्तकर्ता व ट्रेनिंग एंड एजुकेशन सेंटर फॉर हियरिंग इम्पेयर्ड (TECH) के सह–संस्थापक दीपेश नायर ने संस्था के शुरुवाती दिनों के अनुभव साझा करते हुए कहा कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और सामाजिक दायित्व में समन्वय बनाते हुए उन्होंने इस मॉडल को बनाया है। इसके माध्यम से जिन भी बच्चों को शुरुवाती दिनों में पढ़ाई में दिक्कतों को सामना करना पड़ता था, आज उन्हीं बच्चों को जब में स्नातक की पढ़ाई पूरा करते हुए देखता हूं तो प्रसन्नता होती है। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि विद्यार्थी परिषद द्वारा मेरे नाम का चयन किया गया है और पुरस्कार मुझे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा प्रदान किया गया है।

हमारा संविधान–हमारा स्वाभिमान

भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश में जिला स्तर पर संविधान दिवस मनाकर संविधान के प्रति प्रतिबद्धता के साथ बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर जी को कृतज्ञ नमन किया। भाजपा प्रदेश मुख्यालय में प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने सभी को संविधान दिवस की बधाई देते हुए संविधान का पूजन कर नमन किया।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने प्रदेश भाजपा मुख्यालय में संविधान दिवस पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि आज भारत का आधुनिक लोकतंत्र 75 वर्ष की गौरवशाली यात्रा पूर्ण करके आगे बढ़ रहा है। आज ही के दिन 1949 में संविधान देश की जनता को समर्पित किया गया। गणतंत्र, पंथनिरपेक्षता, सशक्त निर्वाचन पद्धति, संघीय ढांचा, मौलिक अधिकर, मूलभूत कर्तव्य, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक न्याय संविधान के कीर्तिमान है। संविधान भारत में सभी नागरिकों के लिए दिग्दर्शक तत्व है। हमारा संविधान–हमारा स्वाभिमान है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत के संविधान के सिद्धान्तों और आर्दशों से सदैव प्रेरणा ली है और संविधान के मूल्यों को सभी लोककल्याणकारी योजनाओं में समाहित किया है। जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाकर एक देश–एक संविधान के संकल्प को सिद्ध किया है। संविधान के निर्माता डा. बाबा साहेब अम्बेडकर जी के जीवन से जुड़े पंचतीर्थों का निर्माण कराकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है। हमारा संविधान हमारे लिए पवित्र ग्रन्थ है। संविधान दिवस पर संविधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए विकसित भारत की ओर देश अग्रसर है। सभी को संविधान दिवस की बधाई।

गोष्ठी में प्रदेश मंत्री श्री शिवभूषण सिंह, प्रदेश मुख्यालय प्रभारी श्री भारत दीक्षित तथा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कुंवर वासित अली ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन कमल ज्योति पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री राजकुमार ने किया।

अगली पीढ़ी को दें लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के जीवन का संदेश : आलोक कुमार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह का भव्य आयोजन

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह समिति अवध प्रान्त की ओर से 'पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह' का भव्य इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह आलोक कुमार उपस्थित रहे। उन्होंने लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के जीवन से प्रेरणा संदेश देते हुए बताया कि एक कुशल शासिका के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने कई ऐसी राजसी परम्पराओं को आरम्भ किया जो आज के समय में भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने धर्मरक्षा का कार्य करने के साथ ही जन–जन के हित के लिये अनेक सफल प्रयास किये, जो उनकी दूरदर्शिता को दर्शाते हैं। उन्होंने कहा, 'हम सबको इस कार्यक्रम में मिले संदेश को अपने शब्दों में दूसरों तक पहुँचाते हुए अगली पीढ़ी को उनके जीवन से प्रेरणा देनी चाहिये।'

पश्चिम सोच भी नहीं सकता था...

सह सरकार्यवाह आलोक कुमार जी ने अपने उद्बोधन के प्रारम्भ में भारत माता को प्रणाम करने के साथ ही कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों से कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने पर यह संदेश मिलता है कि पूर्वाग्रहों को त्यागकर सादगी से जीते हुए उन्होंने वह कर दिखाया जो आज के समय में भी प्रासंगिक है। उन्होंने बताया कि आज से तीन सौ बरस पहले पेंशन जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। युद्ध होते थे। बड़ी संख्या में जनहानि होती थी। ऐसे में कई सैनिक बलिदान हो जाते थे। उनकी विधवाओं को सहारा देने के लिए ही लोकमाता ने अपने मालवा साम्राज्य में साड़ी का उद्योग लगाया। यह उनकी दूरदर्शिता ही थी कि देशभर से साड़ी पर कारीगरी करने वाले विभिन्न कारीगरों को एक स्थान पर लाकर बसाने के साथ ही उन्होंने सबको स्वावलम्बी बनाया। उन्होंने कहा कि लोकमाता अपना सम्पूर्ण समय अपनी जनता की भलाई के लिए ही देती थीं। वह एक साम्राज्ञी होने के बाद भी सादगी से जीते हुए एक छोटे स्थान पर रहती थीं। यही नहीं कृषकों के लिए उन्होंने कई प्रकार की योजनाओं का आरम्भ किया। धर्म का कार्य करने के साथ ही वह किसानों के सामने आने वाली रोजमर्रा की समस्याओं का निदान करती रहती थीं। एक न्यायप्रिय और दूरदर्शी महारानी होने के साथ ही उनमें समाज के हर वर्ग के लिए असीम प्रेम था। जिस समय पश्चिम सोच भी नहीं सकता था उस समय भारत में अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई और दुर्गावती जैसी महान वीरांगनाएं थीं।

अतः आज के समय में यह आवश्यक है कि उनके जीवन से मिलने वाली प्रेरणा को हम अपनी अगली पीढ़ी तक पहुँचाएं।

'कुरीतियों से बाहर निकलकर सामाजिक समरसता के माध्यम से संगठित हों'

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में लोकमाता अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह केन्द्रीय समिति की सचिव डॉ. माला ठाकुर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि अहिल्याबाई

होलकर का लोक कल्याणकारी शासन भूमिहीन किसानों, भीलों जैसे जनजाति समूहों तथा विधवाओं के हितों की रक्षा करने वाला एक आदर्श शासन था। समाजसुधार, कृषिसुधार, जल प्रबंधन, पर्यावरण रक्षा, जनकल्याण और शिक्षा के प्रति समर्पित होने के साथ–साथ उनका शासन न्यायप्रिय भी था। समाज के सभी वर्गों का सम्मान, सुरक्षा, प्रगति के अवसर देने वाली समरसता की दृष्टि उनके प्रशासन का आधार रही। उन्होंने बताया कि लोकमाता ने अपने जीवन से महिला सशक्तिकरण के कई उदाहरण दिये। वह साम्राज्ञी से बढ़कर एक राजयोगिनी थीं। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर एक सभ्य समाज और देश का निर्माण करने का प्रयास करनी चाहिये। लोक माता जब भोजन करती थीं तो वह समाज के सभी वर्ग के लोगों के साथ बैठकर एक साथ एक पंक्ति में भोजन करती थीं।

'धार्मिक कार्य करने के साथ ही समाज का भी चिंतन किया'

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूज्य लोकमाता अहिल्याबाई होलकर के वंशज श्री उदयराजे होलकर ने कहा कि उनके जीवन में समरसता का भाव था। अहिल्याबाई ने महेश्वर राज्य की सीमा को लाँघते हुए पूरे देश में काम किया। समिति के माध्यम से अहिल्याबाई के जीवन को जन–जन तक पहुँचाने का महान कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है। वहीं, बावन मंदिर अयोध्या धाम के पीठाधीश्वर पूज्य महंत श्री बैदेही बल्लभ शरण जी महाराज ने कहा कि लोकमाता जी एक राजयोगिनी थीं। उन्होंने धार्मिक कार्य करने के साथ ही समाज का भी चिंतन किया। उसका उद्धार किया।

501 बालिकाएं लोकमाता अहिल्याबाई की वेषभूषा में दिखीं

कार्यक्रम का आरम्भ दीप प्रज्जवलन करने के साथ किया गया। इसके बाद एक वीडियो डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से सबको अतिथियों को लोकमाता की जीवनगाथा दिखाई गई। इसके उपरांत उनके जीवन को दर्शाते हुए नाटक का मंचन किया गया। नाटक की भावपूर्ण प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम में 501 बालिकाएं लोकमाता अहिल्याबाई की वेषभूषा धारण कर, वीरोचित भाव में धवल वस्त्र धारण कर हाथ में शिवलिंग, माथे पर त्रिपुंड व सिर पर साफा बांधे आकर्षण का केन्द्र रहीं। इनमें से 10 बालिकाओं को पुरस्कृत करने के साथ ही सभी सहभागियों को प्रशस्ति पत्र दिया गया। समिति के संयोजक राजकिशोर जी ने कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई का जीवन भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले सामान्य परिवार की बालिका से एक असाधारण शासनकर्ता तक की उनकी जीवनयात्रा आज भी प्रेरणा का महान स्रोत है।

प्रदर्शनी व रंगोली रही आकर्षण का केन्द्र

इस अवसर पर कार्यक्रम में मंचासीन अतिथियों ने समरसता पाथेय और अहिल्याबाई होलकर पुस्तक का भी विमोचन किया। अहिल्याबाई होल्कर पुस्तक गरिमा मिश्रा ने लिखी है। वहीं, समरसता पाथेय का संपादन अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी समारोह समिति के सदस्य बृजनंदन राजू ने किया है। वहीं, अहिल्याबाई होलकर के जीवन के विविध पहलुओं को उजागर करती प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। महिला सैनिकों का समरांगण में हौंसला बढ़ाती अहिल्याबाई होलकर की प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रही। इस अवसर पर यूपी के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र प्रचारक श्रीमान अनिल जी, अवध प्रान्त के प्रान्त प्रचारक कौशल जी, वरिष्ठ प्रचारक वीरेन्द्र जी, क्षेत्र प्रचार प्रमुख मनोजकांत जी, माधवेन्द्र सिंह जी, राम जी भाई, संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख डॉ. अशोक दुबे जी, अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह के प्रान्त संयोजक श्रीमान राजकिशोर जी, सह संयोजक डॉ. बिपिन द्विवेदी, विश्व संवाद केंद्र के प्रमुख डॉक्टर उमेश, भारत सिंह, विभाग प्रचारक अनिल जी, राष्ट्र सेविका समिति की प्रान्त कार्यवाहिका यशोधरा जी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इसके अलावा पार्किंग व्यवस्था से लेकर,स्वच्छता, स्वागत,जलपान वितरण,आपूर्ति व प्रदर्शनी समेत दर्जनभर व्यवस्थाओं में 500 से अधिक कार्यकर्ताओं ने सेवा दी। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्र सेविका समिति की प्रांत कार्यवाहिका यशोधरा जी व आभार प्रशांत भाटिया ने व्यक्त किया।

टीकाकरण कार्यक्रम को सार्वभौमिक बनाने के लिए डिजिटल प्रयास

जगत प्रकाश नड्डा

विभिन्न बीमारियों की रोकथाम में टीकाकरण की भूमिका वर्ष 1796 में ही साबित हो चुकी थी। यह वह समय था, जब खतरनाक चेचक के खिलाफ पहला टीकाकरण अभियान चलाया गया था। पिछले 50 वर्षों में ही टीकाकरण कार्यक्रमों ने दुनिया भर में 15 करोड़ से ज्यादा लोगों की जान बचाई है, जो हर साल-हर मिनट छह लोगों की जान बचाने के बराबर है।

नागरिकों के जीवन की रक्षा करना भारत के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है। इस कार्यक्रम के तहत हर साल 2.6 करोड़ से ज्यादा नवजात शिशुओं को खसरा, डिप्थीरिया और पोलियो जैसी 12 बीमारियों से बचाव के लिए टीके लगाए जाते हैं। ये जानलेवा हो सकती हैं या बच्चे के स्वास्थ्य एवं सेहत को बुरी तरह प्रभावित कर सकती हैं।

यद्यपि इस कार्यक्रम की शुरुआत 1985 में हुई थी, लेकिन पिछले 10 वर्षों में इसका तेजी से विस्तार हुआ है। मिशन इंद्रधनुष जैसे अभियानों ने टीकाकरण कवरेज को 90 प्रतिशत से अधिक कर दिया है। हालांकि, 100 प्रतिशत टीकाकरण कवरेज हासिल करने में हमारे सामने अभी भी चुनौतियां हैं, जिनमें कुछ क्षेत्रों एवं समुदायों में टीकाकरण की झिझक से लेकर पलायन के कारण कार्यक्रम से ड्रॉपआउट होना या अन्य कई कारक शामिल हैं, इसके परिणामस्वरूप कुछ बच्चे आंशिक रूप से इस टीकाकरण कार्यक्रम का हिस्सा बनते है या उनको इस कार्यक्रम से वंचित रहना पड़ता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत सरकार ने महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। सरकार सभी बच्चों एवं गर्भवती महिला को टीकाकरण के तहत लाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय एक तकनीकी समाधान लेकर आया है, जिसे सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम-विन (यू-विन) कहा जाता है।

यू-विन, एक नाम-आधारित सुविधा है जो 'कहीं भी, कभी भी टीकाकरण' की सुविधा प्रदान करती है। इसे लोगों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया। यह प्लेटफ़ॉर्म टीकाकरण प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए विभिन्न सुविधाएं प्रदान करता है। गर्भवती महिलाएं यू-विन ऐप या पोर्टल के माध्यम से स्वयं पंजीकरण कर सकती हैं या पंजीकरण के लिए निकटतम टीकाकरण केंद्र में जा सकती हैं।

> **नागरिकों के जीवन की रक्षा करना भारत के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है। इस कार्यक्रम के तहत हर साल 2.6 करोड़ से ज्यादा नवजात शिशुओं को खसरा, डिप्थीरिया और पोलियो जैसी 12 बीमारियों से बचाव के लिए टीके लगाए जाते हैं**

एक बार पंजीकृत होने के बाद स्वास्थ्य देखभाल कर्मी गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण कार्यक्रम को ट्रैक कर सकते हैं, प्रसव के रिकॉर्ड रख सकते हैं, नवजात शिशु को पंजीकृत कर सकते हैं और उनके टीकाकरण कार्यक्रम को शुरू कर सकते हैं। इस प्रकिया को स्वास्थ्य कर्मी द्वारा तब तक ट्रैक किया जा सकता है, जब तक बच्चा 16 वर्ष का न हो जाए।

यू-विन माता-पिता एवं अभिभावकों को सहूलियत प्रदान करता है, जिससे वे देश में कहीं भी टीकाकरण सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। यह प्लेटफ़ॉर्म अपॉइंटमेंट बुकिंग सुविधा भी प्रदान करता है, जो विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों के लिए उपयोगी है।

यू-विन 11 भाषाओं में उपलब्ध है, जो प्लेटफ़ॉर्म की पहुंच को विस्तार देता है। एक अन्य प्रमुख विशेषता रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण है। जब भी कोई सत्यापित लाभार्थी टीका प्राप्त करता है, तो एक वास्तविक समय डिजिटल टीकाकरण रिकॉर्ड बनाया जाता है। लाभार्थियों को एक क्यूआर-आधारित प्रमाणपत्र भी मिलता है, जिसे डाउनलोड किया जा सकता है और ऑन-द्-गो सत्यापन के लिए मोबाइल उपकरणों पर संगृहीत किया जा सकता है। यह विशेष रूप से स्कूल में प्रवेश और यात्रा के लिए उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त, प्लेटफ़ॉर्म आगामी टीकाकरण खुराक के लिए एसएमएस सूचनाएं भेजता है, यह सुनिश्चित करता है कि माता-पिता और स्वास्थ्य देखभाल कर्मी खुराक के बीच निर्धारित न्यूनतम अंतराल का पालन करें।

यू-विन एक इंटीग्रेटर के रूप में कार्य करता है, जो माता-पिता/अभिभावकों, डॉक्टरों, स्वास्थ्य देखभाल कर्मी और व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को एक ही मंच पर लाता है। यह पूरे देश में टीकाकरण कवरेज की प्रभावी निगरानी रखने की अनुमति देता है। यह लाभार्थियों को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता (ABHA) और बाल आभा आईडी (ABHA ID) बनाने में सहयोग प्रदान करता है, जिसके माध्यम से व्यक्तिगत सहमति के साथ संबंधित व्यक्ति के स्वास्थ्य रिकॉर्ड

भारत के रतन का जाना...

नरेन्द्र मोदी

आज (9 नवंबर, 2024)श्री रतन टाटा जी के निधन को एक महीना हो रहा है। पिछले महीने आज के ही दिन जब मुझे उनके गुजरने की खबर मिली, तो मैं उस समय आसियान समिट के लिए निकलने की तैयारी में था। रतन टाटा जी के हमसे दूर चले जाने की वेदना अब भी मन में है। इस पीड़ा को भुला पाना आसान नहीं है। रतन टाटा जी के तौर पर भारत ने अपने एक महान सपूत को खो दिया है...एक अमूल्य रत्न को खो दिया है।

आज भी शहरों, कस्बों से लेकर गांवों तक, लोग उनकी कमी को गहराई से महसूस कर रहे हैं। हम सबका ये दु:ख साझा है। चाहे कोई उद्योगपति हो, उभरता हुआ उद्यमी हो या कोई प्रोफेशनल हो, हर किसी को उनके निधन से दु:ख हुआ है। पर्यावरण रक्षा से जुड़े लोग...समाज सेवा से जुड़े लोग भी उनके निधन से उतने ही दु:खी हैं। और ये दु:ख हम सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में महसूस कर रहे हैं।

युवाओं के लिए श्री रतन टाटा एक प्रेरणास्रोत थे। उनका जीवन, उनका व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि कोई सपना ऐसा नहीं जिसे पूरा ना किया जा सके, कोई लक्ष्य ऐसा नहीं जिसे प्राप्त नहीं किया जा सके। रतन टाटा जी ने सबको सिखाया है कि विनम्र स्वभाव के साथ, दूसरों की मदद करते हुए भी सफलता पाई जा सकती है।

रतन टाटा जी, भारतीय उद्यमशीलता की बेहतरीन परंपराओं के प्रतीक थे। वो विश्वसनीयता, उत्कृष्टता और बेहतरीन सेवा जैसे मूल्यों के अडिग प्रतिनिधि थे। उनके नेतृत्व में टाटा समूह दुनिया भर में सम्मान, ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रतीक बनकर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। इसके बावजूद, उन्होंने अपनी उपलब्धियों को पूरी विनम्रता और सहजता के साथ स्वीकार किया।

रतन टाटा जी ने हमेशा बेहतरीन क्वालिटी के प्रॉडक्ट...बेहतरीन क्वालिटी की सर्विस पर जोर दिया और भारतीय उद्यमों को ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करने का रास्ता दिखाया

दूसरों के सपनों का खुलकर समर्थन करना, दूसरों के सपने पूरा करने में सहयोग करना, ये श्री रतन टाटा के सबसे शानदार गुणों में से एक था। हाल के वर्षों में वो भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का मार्गदर्शन करने और भविष्य की संभावनाओं से भरे उद्यमों में निवेश करने के लिए जाने गए। उन्होंने युवा आंत्रप्रेन्योर की आशाओं और आकांक्षाओं को समझा, साथ ही भारत के भविष्य को आकार देने की उनकी क्षमता को पहचाना।

भारत के युवाओं के प्रयासों का समर्थन करके उन्होंने नए सपने देखने वाली नई पीढ़ी को जोखिम लेने और सीमाओं से परे जाने का हौसला दिया। उनके इस कदम ने भारत में इनोवेशन और आंत्रप्रेन्योरशिप की संस्कृति विकसित करने में बड़ी मदद की है। आने वाले दशकों में हम भारत पर इसका सकारात्मक प्रभाव जरूर देखेंगे।

रतन टाटा जी ने हमेशा बेहतरीन क्वालिटी के प्रॉडक्ट...बेहतरीन

क्वालिटी की सर्विस पर जोर दिया और भारतीय उद्यमों को ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करने का रास्ता दिखाया। आज जब भारत 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तो हम ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करते हुए ही दुनिया में अपना परचम लहरा सकते हैं। मुझे आशा है कि उनका ये विजन हमारे देश की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और भारत वर्ल्ड क्लास क्वालिटी के लिए अपनी पहचान मजबूत करेगा।

रतन टाटा जी की महानता बोर्डरूम या सहयोगियों की मदद करने तक ही सीमित नहीं थी। सभी जीव-जंतुओं के प्रति उनके मन में करुणा थी। जानवरों के प्रति उनका गहरा प्रेम जगजाहिर था और वे पशुओं के कल्याण पर केन्द्रित हर प्रयास को बढ़ावा देते थे। वो अक्सर अपने डॉग्स की तस्वीरें साझा करते थे, जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। मुझे याद है, जब रतन टाटा जी को लोग आखिरी विदाई देने के लिए उमड़ रहे थे...तो उनका डॉग 'गोवा' भी वहां नम आंखों के साथ पहुंचा था।

रतन टाटा जी का जीवन इस बात की याद दिलाता है कि लीडरशिप का आकलन केवल उपलब्धियों से ही नहीं किया जाता है, बल्कि सबसे कमजोर लोगों की देखभाल करने की उसकी क्षमता से भी किया जाता है।

रतन टाटा जी ने हमेशा नेशन फर्स्ट की भावना को सर्वोपरि रखा। 26/11 के आतंकवादी हमलों के बाद उनके द्वारा मुंबई के प्रतिष्ठित ताज होटल को पूरी तत्परता के साथ फिर से खोलना, इस राष्ट्र के एकजुट होकर उठ खड़े होने का प्रतीक था। उनके इस कदम ने बड़ा संदेश दिया कि – भारत रुकेगा नहीं...भारत निडर है और आतंकवाद के सामने झुकने से इनकार करता है।

व्यक्तिगत तौर पर मुझे पिछले कुछ दशकों में उन्हें बेहद करीब से जानने का सौभाग्य मिला। हमने गुजरात में साथ मिलकर काम किया। वहां उनकी कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर निवेश किया गया। इनमें कई

ऐसी परियोजनाएं भी शामिल थीं, जिसे लेकर वे बेहद भावुक थे।

जब मैं केन्द्र सरकार में आया, तो हमारी घनिष्ठ बातचीत जारी रही और वो हमारे राष्ट्र-निर्माण के प्रयासों में एक प्रतिबद्ध भागीदार बने रहे। स्वच्छ भारत मिशन के प्रति श्री रतन टाटा का उत्साह विशेष रूप से मेरे दिल को छू गया था। वह इस जन आंदोलन के मुखर समर्थक थे। वह इस बात को समझते थे कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतें भारत की प्रगति की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं। अक्टूबर की शुरुआत में स्वच्छ भारत मिशन की दसवीं वर्षगांठ के लिए उनका वीडियो संदेश मुझे अभी भी याद है। यह वीडियो संदेश एक तरह से उनकी अंतिम सार्वजनिक उपस्थितियों में से एक रहा है।

कैंसर के खिलाफ लड़ाई एक और ऐसा लक्ष्य था, जो उनके दिल के करीब था। मुझे दो साल पहले असम का वो कार्यक्रम याद आता है, जहां हमने संयुक्त रूप से राज्य में विभिन्न कैंसर अस्पतालों का उद्घाटन किया था। उस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वो अपने जीवन के आखिरी वर्षों को हेल्थ सेक्टर को समर्पित करना चाहते हैं। स्वास्थ्य सेवा एवं कैंसर संबंधी देखभाल को सुलभ और किफायती बनाने के उनके प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि वो बीमारियों से जूझ रहे लोगों के प्रति कितनी गहरी संवेदना रखते थे।

मैं रतन टाटा जी को एक विद्वान व्यक्ति के रूप में भी याद करता हूं - वह अक्सर मुझे विभिन्न मुद्दों पर लिखा करते थे, चाहे वह शासन से जुड़े मामले हों, किसी काम की सराहना करना हो या फिर चुनाव में जीत के बाद बधाई सन्देश भेजना हो।

अभी कुछ सप्ताह पहले मैं स्पेन सरकार के राष्ट्रपति श्री पेड्रो सान्चेज के साथ वडोदरा में था और हमने संयुक्त रूप से एक विमान फैक्ट्री का उद्घाटन किया। इस फैक्ट्री में सी-295 विमान भारत में बनाए जाएंगे। श्री रतन टाटा ने ही इस पर काम शुरू किया था। उस समय मुझे श्री रतन टाटा की बहुत कमी महसूस हुई।

आज जब हम उन्हें याद कर रहे हैं, तो हमें उस समाज को भी याद रखना है जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। जहां व्यापार, अच्छे कार्यों के लिए एक शक्ति के रूप में काम करे, जहां प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को महत्व दिया जाए और जहां प्रगति का आकलन सभी के कल्याण और खुशी के आधार पर किया जाए। रतन टाटा जी आज भी उन जिंदगियों और सपनों में जीवित हैं, जिन्हें उन्होंने सहारा दिया और जिनके सपनों को साकार किया। भारत को एक बेहतर, सहृदय और उम्मीदों से भरी भूमि बनाने के लिए आने वाली पीढ़ियां उनकी सदैव आभारी रहेंगी। ■

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

पेज 25 का शेष

चिकित्सा पेशेवरों और अन्य सेवा प्रदाताओं के साथ साझा किये जा सकते हैं। इससे चिकित्सा पेशेवरों को एक नजर में व्यक्ति के चिकित्सा इतिहास को जानने में मदद मिलती है, जो रोगी को बेहतर परामर्श प्रदान करने में सहायक होता है। यू-विन एएनएम और आशा कार्यकर्ताओं को टीकाकरण की सूची बनाने में भी सहायता करता है, जिससे लाभार्थियों का समय पर टीकाकरण किया जा सकें।

पिछले 10 वर्षों में भारत ने स्वास्थ्य सेवा में क्रांति लाने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित स्वास्थ्य प्रणालियों पर भरोसा किया है। 2014 में शुरू किए गए इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क (eVIN) ने वैक्सीन प्राप्त करने, संग्रहीत करने और अंतिम मील तक वितरित करने के तरीके को बदल दिया है। कोविड-19 महामारी के दौरान दुनिया ने भारत के कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम की क्षमता को 'को-विन' कार्यक्रम की सफलता में देखा, जिसने 18 महीने से भी कम समय में 220 करोड़ कोविड-19 वैक्सीन खुराक देने में मदद की। अब यू-विन टीकाकरण कवरेज में उल्लेखनीय सुधार करके देश में टीकाकरण सेवाओं के परिदृश्य को बदलने के लिए तैयार है।

जैसे-जैसे भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रहा है, मजबूत टीकाकरण कार्यक्रमों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता सिर्फ़ एक स्वास्थ्य पहल नहीं है - यह भविष्य के लिए एक आधारभूत निवेश है। उन्नत डिजिटल बुनियादी ढांचे और व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीतियों के माध्यम से अपने सबसे कम उम्र के नागरिकों के टीकाकरण को प्राथमिकता देकर, भारत न केवल रोकथाम योग्य बीमारियों का मुकाबला कर रहा है, बल्कि एक स्वस्थ आबादी को जन्म दे रहा है।

यह प्रयास एक ऐसे भविष्य का निर्माण करने के दृढ़ संकल्प को दर्शाते हैं, जहां कोई भी बच्चा जीवन रक्षक टीकों के बिना न रहे, चाहे वे कहीं भी रहते हों।

(लेखक भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष और केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री हैं)

भारत की रक्षा क्रांति उड़ान भर रही है!

नरेन्द्र मोदी

कल (29 अक्टूबर) का दिन भारत की रक्षा एवं एयरोस्पेस यात्रा में एक महत्वपूर्ण पल था, जब हमने स्पेन के राष्ट्रपति और मेरे मित्र श्री पेड्रो सांचेज के साथ वडोदरा में सी-295 विमान निर्माण परिसर का उद्घाटन किया।

हमारी कार्यान्वयन की गति आश्चर्यजनक रही है— आधारशिला रखे जाने से लेकर परिचालन सुविधा शुरू होने में सिर्फ दो वर्षों का समय! यह एक नई कार्य-संस्कृति और भारत के लोगों की क्षमताओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

भारत की इस सफलता को आंकड़ों में देखा जा सकता है:

- रक्षा उत्पादन बढ़कर 1.27 लाख करोड़ रुपये (2023-24) हो गया है।
- रक्षा निर्यात 2014 में 1,000 करोड़ रुपये से बढ़कर आज 21,000 करोड़ रुपये हो गया है।
- सिर्फ 3 साल में 12,300 से ज्यादा वस्तुओं का स्वदेशीकरण किया गया है।
- डीपीएसयू द्वारा घरेलू विक्रेताओं में 7,500 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया गया है।
- रक्षा अनुसंधान एवं विकास बजट का 25 प्रतिशत उद्योग-आधारित नवाचार के लिए रखा गया है।

लेकिन आंकड़ों के अलावा कुछ ऐसी चीजें भी हैं जो सभी को खुशी प्रदान कर रही हैं।

संपूर्ण रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव हो रहा है:

1. विनिर्माण सफलता:

- स्वदेशी युद्धपोत हमारे जलक्षेत्र में गश्त कर रहे हैं
- भारत में निर्मित मिसाइलें हमारी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत कर रही हैं
- घरेलू स्तर पर निर्मित बुलेटप्रूफ जैकेट हमारे सैनिकों की रक्षा कर रही हैं
- हम रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन रहे हैं और रक्षा उपकरण निर्माता के रूप में शीर्ष स्थान पर आने के लिए भी काम कर रहा है

2. रणनीतिक अवसंरचना:

- उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु में दो आधुनिक रक्षा गलियारों का निर्माण।

3. नवाचार पहल:

- iDEX (रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार) एक संपूर्ण स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को सशक्त बना रहा है।
- एमएसएमई रक्षा आपूर्ति श्रृंखला का अभिन्न अंग बन रहे हैं
- उद्योग-अकादमिक भागीदारी, अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा दे रही है

हमारी युवा शक्ति की ताकत और कौशल तथा सरकार के प्रयासों के कारण हम निम्नलिखित प्रभाव देख रहे हैं:

- आयात निर्भरता में कमी
- रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन
- युवाओं के लिए कौशल विकास
- रक्षा क्षेत्र में एमएसएमई को बढ़ावा मिल रहा है

एक समय वह था, जब हमारी सेनाओं को आवश्यक उपकरणों की कमी का सामना करना पड़ता था; उससे लेकर आज के आत्मनिर्भरता के युग तक; यह एक ऐसी यात्रा है जिस पर हर भारतीय गर्व कर सकता है।

आह्वान:

हमारे युवाओं, स्टार्टअप्स, निर्माताओं और नवोन्मेषकों के लिए— भारत का रक्षा क्षेत्र आह्वान कर रहा है! इतिहास का हिस्सा बनने का यह आपका समय है। भारत को आपकी विशेषज्ञता एवं उत्साह की आवश्यकता है।

नवाचार के लिए दरवाजे खुले हैं, नीतियां सहायक हैं, और अवसर अभूतपूर्व हैं। हम सब मिलकर भारत को न केवल रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाएंगे, बल्कि रक्षा विनिर्माण में वैश्विक नेतृत्वकर्ता भी बनेंगे।

आइए, हम सब मिलकर एक मजबूत, 'आत्मनिर्भर भारत' का निर्माण करें!

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

श्रद्धांजलि

पूर्वांचल के गांधी के रूप में विख्यात

श्यामदेव राय चौधरी 'दादा' का कैलाशवास

भुलई भाई पंचतत्व में विलिन

विधि के विधानानुसार जनसंघ काल के भाजपा कार्यकताओं के निधन से भाजपा मर्माहत है। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, समेत प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी, महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह ने श्रद्धांजलि देते हुए इसे पार्टी की अपूर्णनीय क्षति बताया।

काशी की राजनीति में सादगी, ईमानदारी, कार्यकर्ताओं के लिए समर्पित "दादा" का निधन हो गया है। जिनके निधन पर उनके क्षेत्र शहर दक्षिणी के विधायक श्री नीलकण्ठ तिवारी जी श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं। दादा को मुझे छात्र जीवन से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ! और काफी नजदीकी सानिध्य प्राप्त हुआ! क्योंकि सन 1989 में श्री हरिशचंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी में मैं छात्र संघ का महामंत्री हुआ और इसी साल दादा पहली बार विधानसभा दक्षिणी का चुनाव जीते थे!

आरक्षण और श्री राम जन्मभूमि का आंदोलन चरम पर था! थाना पुलिस की, प्रशासन की समस्याएं लगातार बनी रहती थी! ऐसे में दादा से नित्य मार्गदर्शन आंदोलन के क्रम में और प्रशासनिक व्यवस्था से जूझने हेतु प्राप्त होता था!

दादा का चुनाव संपर्क का अभियान भी अनोखा होता था! चुनाव संपर्क में सुबह की पारी में 7:30 बजे तक घर से निकल जाते थे बिना किसी ताम झाम अकेले प्रत्येक बूथ पर घर–घर संपर्क करते थे! हम लोग आगे बढ़कर के दादा जिस रास्ते पर चल रहे होते उस रास्ते के दरवाजे को खटखटाना ताकि दादा

कुशीनगर सबसे बुजर्ग व पुराने ठश्रच कार्यकर्ता भुलई भाई का 111 की उम्र में निधन हो गया. केसरिया गमछा भुलई भाई की पहचान थी। 1974 में नौरंगिया से भारतीय जनसंघ से विधायक रहे भुलई भाई उस समय देवरिया के नौरंगिया (वर्तमान में कुशीनगर के खड्डा) से विधायकी का चुनाव जीता था। बीजेपी के गठन के बाद भुलई भाई बीजेपी के कार्यकर्ता बन गए.

कोविड काल में पीएम ने लिया आशीर्वाद कोविड काल में भुलई भाई तब चर्चा में आये थे जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2020 ने खुद फोन करके उनका हालचाल लिया था। उस समय पोते कन्हैया ने जब बताया कि फोन पर दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं तो भुलई भाई की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। प्रधानमंत्री ने कहा था कि सोचा, इस संकट के समय आपका आशीर्वाद लूं। इस पर पूर्व विधायक ने कहा कि आप यशस्वी हों और जब तक स्वस्थ रहें। देश की सेवा

जब पहुंचे वहां पर तो घर के सदस्य बाहर आ जाएं! जब पार्टी ने मुझे भारतीय जनता युवा मोर्चा का अध्यक्ष का दायित्व दिया तो उस समय हमारे महामंत्री थे श्री नरसिंह दास! एक अत्यंत भावपूर्ण अनुभव दादा के साथ का बताना यहां उचित समझता हूं ! भारतीय जनता युवा मोर्चा का राष्ट्रीय अधिवेशन आगरा में था! बस की व्यवस्था ,उसके भाड़े की व्यवस्था ,कार्यकर्ताओं को ले जाने की व्यवस्था के नाते सभी भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित विधायक लोगों से संपर्क कर सहयोग हम लोग प्राप्त कर रहे थे! दादा के पास मैं और नरसिंह दास गए और पूरा विषय बताएं! दादा थोड़ी देर शांत रहे! फिर कहे रुकिए मैं आता हूं! दादा किसी के साथ मोटरसाइकिल से बैंक गए बैंक से रुपया निकाल कर हम लोगों के हाथों में दिए ₹1000 दिए! और हम लोगों से कहें यही कर सकता हूं! शेष मेरी शुभकामनाएं! वह ₹1000 एक लाख के बराबर हम लोग लग रहा था! अत्यंत भावपूर्ण छड़ था! अंतिम विधानसभा चुनाव 2012 में चुनाव की लड़ाई समान्य रूप से काफी कड़ी दिखाई दे रही थी! कांग्रेस प्रत्याशी उस समय विजई होते हुए दिख रहे थे ! लेकिन दादा ने कहा परिणाम अच्छा होगा और यही हुआ अच्छे अंतराल से दादा की विजय हुई!

दादा व्यक्ति नहीं एक विचार थे!

सड़क से लेकर विधानसभा तक एक अलग प्रकार की शैली का सृजन किया ! दादा में आंदोलन की अद्भुत क्षमता थी !लंबे समय तक अनशन पर बैठना, संवैधानिक परंपरा का अनुपालन करते हुए अहिंसा वादी तरीके से आंदोलन करना और आंदोलन का परिणाम प्राप्त करना! दादा से सीखा जा सकता है ! जब 2017 मे दादा की जगह पर संगठन ने मुझे लड़ने का दक्षिणी विधानसभा से निर्देश दिया तो मैं अकेले दादा के पास गया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया! उनका शब्द था कि संगठन ने जो तय किया उससे विरक्त नहीं हुआ जा सकता और मेरे प्रणाम करने पर पीठ पर हाथ रखकर के आशीर्वाद दिए! 3 नवंबर को दादा ने फोन करके बहुत ही मनोविनोद तरीके से कहा कि आपकी मिठाई प्राप्त हो गई ,आप नहीं आए और कहा समय निकाल करके एक–दो दिन में आइये! क्योंकि 3 तारीख को काफी व्यस्तता थी तो नहीं जा सका चार को जाने के सोचा लेकिन शायद दादा से बात करना लिखा नहीं था और जब शाम को जाने के बारे में सोचा तब तक उनकी तबीयत बिगड़ चुकी थी! और फिर 5 नवंबर को गैलेक्सी अस्पताल में गया लेकिन दादा बोलने की स्थिति में नहीं थे! बात नहीं हो पाई!दादा क्या कहना चाहते थे बस अनुमान ही लगाया जा सकता है ! एक स्वच्छ राजनीति, पारदर्शी राजनीति कैसे की जा सकती है और की जाती है दादा उसके उदाहरण रहे! आज दादा हम लोग के बीच लंबी बीमारी के बाद नहीं रहे! भगवान भोलेनाथ श्री विश्वनाथ जी दादा की आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें! उनके पारिवार जनों को यह दुख बर्दाश्त करने की क्षमता दें ! ओम शांति!

करते रहें'। प्रधानमंत्री ने पूर्व विधायक से ढाई मिनट तक बात की थी. जिस पर उन्होंने प्रधानमंत्री ने आभार जताया था।

विधानसभा चुनाव 2022 भुलई भाई से जीत के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने फोन पर बात कर आशीर्वाद लिया था। भुलई भाई ने योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री के रूप में देखने की इच्छा जताई। उन्होंने योगी से फोन पर करीब 41 सेकंड तक बात की। इस दौरान पूर्व विधायक ने पहले नमस्कार किए फिर योगी आदित्यनाथ को अपना हाल बताया था. भुलई भाई ने कहा था की आपको प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद प्रधानमंत्री के रूप में देखने की इच्छा है। उन्हें पूरा विश्वास है कि उनकी यह इच्छा जरूर पूरी होगी, क्योकि ईश्वर पर उन्हें पूरा भरोसा है।

समाज सेवा के लिए नौकरी छोड़ी श्रीनारायण उर्फ भुलई भाई जनसंघ के टिकट पर विधायक रह चुके हैं। जब भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तो श्री नारायण उर्फ भुलई भाई एमए के छात्र थे। उस वक्त दीनदयाल उपाध्याय से प्रभावित होकर उन्होंने जब सिद्धांतों के रास्ते पर चलना शुरू किया तो इन सिद्धांतों का दामन हमेशा थामे रखा। एमए के बाद एमएड किया और इसके बाद भुलई भाई शिक्षा अधिकारी (एसडीआई) बन गए, लेकिन 1967 में उन्होंने नौकरी छोड़ दी और सियासत में आकर देश और समाज के लिए कुछ करने की ठानी। 1974 में उनको भारतीय जनसंघ ने अपना उम्मीदवार बनाया और भुलई भाई विधायक बन गए। वह दो बार नौरंगिया विधानसभा क्षेत्र में जीत दर्ज किए। 1977 में जनसंघ के साथ मिलकर बनी जनता पार्टी के चुनाव चिह्न पर फिर विधायक चुने गए।

ईमानदारी और सादगी के लिए मशहूर 1980 में जब भारतीय जनता पार्टी बनाई गई तब भुलई भाई बीजेपी में आ गए थे। पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच भुलई भाई की सादगी और उनकी ईमादार छवि काफी चर्चित रही है। बाढ़ से घिरे गरीबों की स्थिति का भोजपुरी में वर्णन करने पर भी वो काफी प्रसिद्ध हुए। भुलई भाई सक्रिय राजनीति में उतरने से पहले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भी जुड़े हुए थे। इस दौरान वह देवरिया जिले के प्रचारक भी रहे। आपातकाल के समय में वह कई महीनों तक जेल में भी रहे। उनकी छवि ईमानदार नेता के रूप में रही।

Tav Shubh Naame
संगठन पर्व
सक्रिय सदस्यता एवं संगठनात्मक चुनाव
बैठक
27 नवम्बर, 2024 (बुधवार)
विश्वेश्वरैया सभागार, लखनऊ
Tav Shubh Naame

संगठन पर्व

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
नवम्बर द्वितीय अंक 2024 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।